क्या, काम आई पढाई

(युवा, शिक्षा एवं रोजगार में अन्तरसंबंधः एक अध्ययन)

अध्ययन प्रतिवेदन

अगस्त 2009

आजीविका ब्यूरो
38, मंगलम काम्पलैक्स, साइफन कोलोनी,
बेदला रोड उदयपुर - 313 004
फोन न. 0294 2454092, फैक्स 2454429
Email: info@aajeevika.org, website : www.aajeevika.org

मार्गदर्शन

राजीव खण्डेलवाल, निदेशक, आजीविका ब्यूरो, उदयपुर
कृष्णावतार शर्मा, कार्यक्रम प्रबंधक, आजीविका ब्यूरो, उदयपुर

अध्ययन समूह

सन्तोष पूनियां
रमेश बुनकर
ईश्वर वैष्णव
मुकेश वंजारा
उदय चौधरी

विषय सूची

अध्याय	विषय			पृष्ठ संख्या
1.	पृष्ठभूमि			4
2.	अध्ययन के विषय में			5–7
	2.1	अध्ययन की आवश्यकता		
	2.2	अध्ययन के उद्देश्य		
	2.3	अध्ययन के मुख्य प्रश्न		
3.	अध्ययन पद्धति			7–8
	3.1	अध्ययन क्षेत्र व नमूना चयन		
	3.2	अध्ययन विधि		
4.	उत्तरदाताओं का सामान्य विवरण			9–14
	4.1	शिक्षित श्रमिकों की आयु का विवरण		
	4.2	शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण		
		4.2.1	शिक्षा के आधार पर शिक्षित श्रमिक	
		4.2.2	विद्यार्थीयों की शिक्षा	
	4.3	जातीय संरचना		
		4.3.1	शिक्षित श्रमिकों का जातिवर्ग के आधार पर वर्गीकरण	
		4.3.2	जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थी	
	4.4	श्रमिकों की वैवाहिक स्थिति		
5.	श्रमिकों के वर्तमान कार्य व पलायन सम्बन्धी जानकारी			15–18
	5.1	श्रमिकों के कार्यस्थल		
	5.2	कार्य के वर्ष व कार्यक्षेत्र		
		5.2.1	श्रमिकों का कार्यक्षेत्र	
	5.3	श्रमिकों की मासिक आय		
6.	उत्तरदाताओं के परिवार व कार्य चुनाव में उनकी भूमिका			19–24
	6.1	श्रमिकों के परिवारों का प्रकार व सदस्यों की संख्या		
	6.2	श्रमिकों के पुश्तैनी व्यवसाय		
	6.3	विद्यार्थीयों के पिता की शिक्षा एवं परिवारों का पुश्तैनी व्यवसाय		
	6.4	अभिभावकों की राय		
7.	स्कूली शिक्षा एवं वातावरण			25–27
	7.1	विद्यार्थीयों द्वारा विषय का चुनाव		
	7.2	पढ़ाई छोडने के कारण		
8.	कार्य के बारे मेंजानकारी के स्रोत			28–33
	8.1	कार्य की जानकारी के स्रोत		
	8.2	छात्रों को रोजगार के लिए मिलने वाली जानकारीयों के स्रोतों का विवरण		
	8.3	कार्य चुनाव के पहलू		

	8.4	क्यों नहीं मिला कार्य?	
9.	अपेक्षाऐं व भविष्य के सपने		34–36
	9.1	क्या बनने की इच्छा है?	
	9.2	श्रमिकों की कार्य से संतुष्टि	
10.	निष्कर्ष एवं सीख		37–38
10.	सम्भावित हस्तक्षेप		39

चार्ट एवं तालिका

क्रमांक	चार्ट विषय	पृष्ठ संख्या
01	शिक्षित श्रमिकों की शिक्षा का विवरण	10
02	जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थीयों की शिक्षा	11
03	श्रमिकों का जातिवर्ग के आधार पर वर्गीकरण	12
04	जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थी	13
05	वैवाहिक स्थिति के अनुसार श्रमिक	14
06	कार्यस्थल के अनुसार श्रमिकों का वर्णन	15
07	कार्यक्षेत्र के अनुसार श्रमिकों का वर्गीकरण	17
08	जातिवर्ग के अनुसार श्रमिकों के परिवार का प्रकार	20
09	विद्यार्थीयों द्वारा विषय चुनाव में जानकारी के स्रोत	25
10	श्रमिकों के पढ़ाई छोड़ने के कारण	26
11	रोजगार के लिए मिलने वाली जानकारी के स्रोत	30
12	श्रमिकों के कार्य चुनाव के पहलू	31
13	विद्यार्थीयों के अनुसार शिक्षा के बाद भी कार्य नहीं मिल पाने के कारण	32
14	श्रमिकों की कार्य से संतुष्टि	35

क्रमांक	तालिका विषय	पृष्ठ संख्या
01	आयु का विवरण	9
02	श्रमिकों की कार्यअवधि	16
03	श्रमिकों की मासिक आय	18
04	श्रमिकों के परिवारों की सदस्य संख्या	19
05	श्रमिकों का पारिवारिक व्यवसाय	21
06	जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थीयों के पिता की शिक्षा	22
07	श्रमिकों के कार्य के बारे में जानकारी के स्रोत	28
08	जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थीयों द्वारा अपने लिए सोचे गए कार्यों का विवरण	34

1. पृष्टभूमि :-

“प्रगतिशील शिक्षा” एक ऐसा मुहावरा है जो कि शिक्षा के विरोध में नहीं भी है तो उसके तीखे विभेद से उत्पन्न हुआ है। उस शिक्षा के तीखे विभेद से जिसकी विषयवस्तु मुख्यतः जड़ है, सिखाने के तरीके सत्तावादी हैं, और जो शिक्षार्थीयों को निष्क्रिय ग्रहणकर्ता के रूप में देखती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ाई के समय छात्रों को आगे आने वाले समय का व अपने कार्य का ज्ञान कराने के लिए स्कूलों में या अन्य किसी स्थान पर कोई सुविधा नहीं होती है। इसके अभाव में अक्सर यह देखा जाता कि पढ़े लिखे युवा भी मजदूरी या अन्य अकुशल कार्य करने के लिए विवश हो जाते हैं। यही कारण है कि अधिकतर छात्र किसी एक वर्ष फेल होने पर वह अगले साल पढाई को निरन्तर रखने का प्रयास नहीं करते हैं और कार्य की तलाश में निकल जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे भी निरक्षर श्रमिकों के साथ मजदूरी करते हुए मिलते हैं। अपनी पढ़ाई से प्राप्त ज्ञान को अपने व्यावसायिक जीवन का उद्देश्य न बना पाने का मुख्य कारण उनको अवसरों की जानकारी का अभाव है। युवाओं के ऊपर कमाई का दबाव रहता है जिसके चलते वह जो काम मिल जाए उसी को कर लेते हैं। दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण युवा में स्वयं को अगल रख कर अपने व्यावसायिक ताने-वाने के बारे में सोचने की क्षमता की कमी के कारण वह अपनी शिक्षा का अपेक्षित लाभ नहीं उठा पाते हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली भी इसके लिए कहीं हद तक जिम्मेदार है। छात्रों को शिक्षा के माध्यम से भविष्य की योजनाओं के बारे में सोच न जगा पाना व उन पर अमल करने के तरीकों पर कोई कार्य नहीं किया जाता है। आजीविका ब्यूरो के श्रमिकों के साथ कार्य करने के अपने अनुभवों से पता चलता है कि इस क्षेत्र के पढ़े युवाओं को भी कार्य के अच्छे अवसर प्राप्त नहीं हो पाते हैं।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि युवा अपने कार्य के चुनाव व निर्धारण में पढ़ाई का उपयोग नहीं कर पाते हैं। कार्य की जानकारी के स्रोत अभी भी पारम्परिक हैं और उनका दायरा बहुत ही सीमित है। परिवार की कार्य के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती है, साथ ही शहरों में पहले प्रवास करने वाले रिश्तेदार और मित्र नए लोगों को कार्य पर लगाने में उनकी मदद करते हैं।

शिक्षा केवल रोजगार के लिए ही नहीं होती है शिक्षा से व्यक्ति के स्वयं के विकास व ज्ञान में भी विस्तार होता है। देखा यह गया है कि रोजगार नहीं मिलने पर व्यक्ति दूसरी चीजों

को अधिक समय तक सजो के नहीं रख पाता है। 10वीं व उससे भी अधिक पढ़ाई के बाद युवा एक सम्मानजनक रोजगार पाने का हकदार होता है। आज देखने को मिलता है कि हमारे क्षेत्र के युवा शहरों में मजदूरी या अकुशल कार्य करने को विवश हैं। कार्य उसकी जरूरत तो है परन्तु उसे अपनी योग्यता और शिक्षा के अनुसार यह उपलब्ध नहीं हो पाता है।

दक्षिण राजस्थान के सुदुर गांवों में शिक्षा की स्थिति एक गंभीर समस्या प्रतीत होती है। शिक्षा हर भारतीय नागरिक का अधिकार है इस अधिकार की पूर्ति के लिए बच्चों को शिक्षा तो मिल रही है पर शिक्षा की गुणवत्ता एवं नीतियां इतनी असरकारक नहीं हैं जो कि इस शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर कर सकें। शिक्षित युवा भी आज स्कूल छोड़ने के बाद अकुशल बेराजगारों की कतार में खडा हुआ दिखता है। सरकारी आंकडों को आकर्षक बनाने के लिए कक्षा 1 से 5 तक सभी को पास करने कि नीति बना रखी है पर बच्चों का न्यूनतम शैक्षणिक स्तर क्या है? यह यक्ष प्रश्न हमारे सामने है।

2. अध्ययन के विषय में

2.1 अध्ययन की आवश्यकता :-

आजीविका ब्यूरो का कार्य प्रवासी श्रमिकों के साथ है और ब्यूरो ने अपने चार वर्ष के अनुभव में यह पाया है कि अक्सर शिक्षित युवा भी कार्य के नाम पर केवल मजदूरी ही तलाशता है। इसके पीछे वैसे तो कई कारण हैं जैसे रोजगार के अवसरों का अभाव, दक्षता की कमी, कार्य के अवसरों के बारे में जानकारी न होना इत्यादि। इसके साथ ही एक प्रमुख कारण यह भी है कि पढ़ाई के समय छात्र को ऐसा कोई रास्ता नहीं दिखाया जाता है कि पढ़ाई के बाद वह अपने लिए कार्य तय कर सके। परिवार के सदस्य व रिश्तेदार भी बाजार में उभरते रोजगार के अवसरों से अनभिज्ञ होने के कारण कार्य चयन में युवाओं की कोई मदद नहीं कर पाते हैं।

कई अध्ययन एवं सर्वे यह तथ्य उजागर करते हैं कि शिक्षा के दृश्य लाभ के अभाव के कारण इस क्षेत्र से हजारों बाल श्रमिक गुजरात एवं महाराष्ट्र की तरफ पलायन करते हैं। इस शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार के बिना विकास की कल्पना करना सार्थक नहीं है। इसी के उलट आज विकसित क्षेत्र के बच्चों का शैक्षणिक स्तर गांवों के बच्चों के शैक्षणिक स्तर से कई गुना अधिक है। आज विकसित क्षेत्र के बच्चों को वो तमाम सुख-सुविधाऐं उपलब्ध हैं

जो उनके बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक हैं। एक तरफ अवसर एवं सुविधाएं मिलने के कारण बच्चे का सम्पूर्ण विकास होता है वहीं दूसरी तरफ इन अवसरों व जानकारी के अभाव में इनका समग्र विकास व व्यावसायिक जीवन प्रभावित होता है। यही अन्तराल दोनों के जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ता है। आम तौर पर देखने को मिलता है कि :-

- क्षेत्र के पढ़े-लिखे युवा भी अच्छे व नए अवसरों से लाभान्वित नहीं हो पाते हैं।
- यहां के कई युवा शहरों में मजदूरी के निचले स्तरों पर अन्य श्रमिकों के साथ कार्य करने को मजबूर हैं।
- युवाओं के रोजगार के चुनाव में शिक्षा का प्रायः कोई सम्बन्ध नहीं दिखता है।
- नई नौकरीयों व अवसरों के बारे पता करने के स्रोतों के अभाव में अपनी शिक्षा का उपयोग अपने कार्य में नहीं कर पाते हैं।

2.2 अध्ययन के मुख्य उद्देश्य :-

प्रस्तुत अध्ययन युवाओं के कार्य चुनाव व शिक्षा के मध्य सम्बंध को पता लगाने का एक व्यवस्थित प्रयास है। एक छात्र अपनी पढाई के समय में अपने भविष्य की योजानाओं के बारे में क्या सोचता हैं। वह जानकारी कहां से व कैसे जुटाता है, तथा उसके कार्य निर्धारण में घर के अन्य सदस्यों विशेष रूप से अभिभावकों का कितना योगदान रहता है।

प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं :

- शिक्षा व रोजगार में अर्न्तसम्बंध समझना,
- छात्रों में रोजगार के निर्धारण की प्रक्रिया के बारे में निर्णय लेने के स्त्रोतों को समझना,
- कार्य के निर्धारण में अभिभावकों की भूमिका को समझना,
- रोजगार के निर्धारण में अध्यापकों की भूमिका को समझना।

2.3 अध्ययन के मुख्य प्रश्न

इस अध्ययन के माध्यम ये हमने यह समझने का प्रयास किया है कि "शिक्षा का आजीविका में क्या योगदान है। शिक्षित युवा के लिए श्रम बाजार में कोई नए आयाम खुलते हैं?"

इस अध्ययन के उपरोक्त वर्णित मुख्य प्रश्न के विस्तार में जाने के लिए हमारा यह प्रयास है कि इससे सम्बंधित बिन्दुओं पर भी जानकारी एकत्रित की जाए। इसी क्रम में हमने विषय से जुड़े हुए निम्न उप प्रश्नों के उत्तर अध्ययन के माध्यम से खोजने का प्रसाय किया है।

- छात्र अपने भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं?
- आगामी कार्य के बारे में जानकारी लेने के स्रोत क्या होते हैं?
- अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा के बारे में क्या दायित्व निभाते हैं?

शिक्षा मावन के विकास का प्रमुख आधार स्तम्भ है जो उसे कुशल और प्रशिक्षित कर प्रगति के पथ पर ले जाती है। ऐसे में 'ग्रामीण विकास' में भी 'शिक्षा' के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। शिक्षा की प्रमुख भूमिका जनशक्ति को कुशल, दक्ष व क्रियाशील बनाना है। देखा गया है कि शहरी युवा तो मनचाहे डिग्री-डिप्लोमा पाठ्यक्रम कर आगे बढ़ जाते हैं लेकिन ग्रामीण युवाओं को घर से दूर रहकर डिग्री-डिप्लोमा करने के लिए संघर्ष करना पडता है। ऐसे युवाओं को पारम्परिक डिग्रियों को लेने के बाद भी रोजगार नहीं मिल पाता है और पारम्परिक शिक्षा की उपयेागिता भी लगातार घटती जा रही है।

शिक्षा युवाओं को आजीविका अर्जित करने के लिए किस प्रकार से तैयार करने में मदद करती है। आए दिन बाजार में खुलने वाले रोजगार के अवसरों से किस प्रकार जोड़ती है तथा आय उनके काम को निर्धारित करने में किस प्रकार से मददगार शाबित होती है। अभिभावक जो कि अपने बच्चे के कार्य चुनाव में प्रमुख सलाहकार होते हैं की भी भूमिका के बारे में पता लगाने के लिए अध्ययन में विशेष रूप से एक पक्ष रखा गया है।

3. अध्ययन पद्धति

3.1 अध्ययन क्षेत्र व नमूना चयन

- अध्ययन हेतु राजस्थान के राजसमन्द जिले की कुम्भलगढ तहसील, उदयपुर शहर व गुजरात के अहमदाबाद शहर का चयन किया गया है।
- अध्ययन के लिए वर्तमान में पढाई करने वाले छात्रों के विचारों को जानने के लिए 10वीं, 11वीं तथा 12वीं व उससे ऊपर की कक्षा में पढने वाले 40 छात्रों का व इन कक्षाओं में से पढाई छोड़ चुके और अभी श्रमिक बाजार में मजदूरी कर रहे 30 युवाओं को अध्ययन में शामिल किया गया। जिनका चयन निदर्शन चयन पद्धति से किया गया है।

- अभिभावकों के दायित्व, अपने पुत्र-पुत्री के प्रति जिम्मेदारी व उनकी सोच को गहराई से समझने के लिए तीन समूहों से गहन चर्चा की गई है।
- अध्यापकों की राय व सुझाव जानने के लिए 4 अध्यापकों से व्यक्तिगत तौर पर सघन चर्चा की गई।

3.2. अध्ययन विधि

प्रस्तावित अध्ययन में छात्रों की भविष्य के कार्य के बारे में निर्धारण करने की प्रक्रिया व शिक्षा और आजीविका के सम्बन्ध को बेहतर तरीके से समझने के लिए निम्न तरीकों का निर्धारण किया गया है।

3.2.1 आकडों का संकलन :-

- प्रश्नावली आधारित सर्वे :- इस अध्ययन में छात्रों से प्रश्नावली के आधार पर तथ्य एकत्रित किए गए। इस प्रश्नावली में छात्रों की भविष्य की योजनाओं सम्बन्धी सूचनाओं के अलावा अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर क्रमवार सूचनाए ली गई। प्रश्नावली बहुत ही रोचक व स्व लिखित आधार पर तैयार की गई थी। इसी क्रम में एक समूह शिक्षित श्रमिकों का था जिनसे भी एक प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाऐं एकत्रित की गई। इसके लिए उदयपुर, अहमदाबाद में कार्य करने वाले श्रमिकों से बात की गई और उनसे तथ्य एकत्रित किए गए।

- लक्ष्य समूह चर्चा :- चयनित अध्ययन क्षेत्र में 3 लक्ष्य समूह बैठक आयोजित की गई जिनमें अध्ययन के उद्दश्यों के आधार पर भिन्न-भिन्न समूह के रुप में छात्रों के लिए रोजगार के अवसरों की स्थिति की जानकारी व समस्याओं पर चर्चा की गई। इन चर्चाओं में अभिभावकों की भागीदारी। इन चर्चाओं को क्षेत्र के आधार पर केलवाडा के पास के गांव में, चारभुजा जहां अन्य पिछडा वर्ग समुदाय के प्रवासियों की संख्या अधिक है और अनुसूचित जन-जाति बाहुल्य वाले गांवों को शामिल किया गया।

- सघन साक्षात्कार :- अध्यापकों के साथ जो कि माध्यमिक और उससे ऊपर की कक्षाओं को पढ़ाते हैं और इन छात्रों के सम्पर्क में रहते हैं उनके सघन साक्षात्कार किए गए। अध्यापकों के साथ छात्रों के भविष्य के निर्धारण के स्रोतों, अवसरों, सम्भावनाओं व शिक्षा व्यवस्था पर सघन साक्षात्कार आयोजित किए गए।

अध्ययन से प्राप्त आकडों के अनुसार विवरण

4. उत्तरदाताओं का सामान्य विवरण

प्रतिवेदन के इस भाग में उत्तरदाताओं की आयु, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति तथा जातिय संरचना का विवरण दिया गया है। निम्न तथ्य हमें उत्तरदाताओं के बारे में बेहतर समझ बनाने में मददगार होंगे।

4.1 शिक्षित श्रमिकों की आयु का विवरण

सारणी 1 : आयु का विवरण

क्र.स.	आयुवर्ग	OBC	SC	ST	प्रतिशत (कुल 30)
1.	18–25 वर्ष	1	1	7	30.00%
2.	26–30वर्ष	0	6	7	43.33%
3.	31वर्ष और अधिक	0	1	7	26.67%
कुल		**01**	**08**	**21**	**100%**

इस सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में शामिल लगभग दो तिहाई श्रमिक 30 वर्ष और उससे में भी कम आयु के हैं। इससे एक बात स्पष्ट होती है कि आज अन्य कोई चारा नहीं होने के कारण ये युवा भी मजदूरी के लिए चौकटियों पर खड़े मिल जाते हैं। रोजगार का बढ़ता दवाब इन युवाओं को जल्दी इन बाजारों की तरफ धकेलता है। दक्षता व उचित मार्गदर्शन के अभाव में भी युवा असंगठित मजदूरी में आ जाते हैं।

आयु के हिसाब से देखें तो अनुसूचित जन-जाति के श्रमिक ही किशोरावस्था में ही काम की शुरुआत करते दिख रहे हैं। इससे इनके सामने जल्दी बेरोजगार होने की समस्या भी रहती है क्योंकि ये युवा फिर जल्दी ही वापस घर पर भी आ जाते हैं। इनके वापस आने पर इन्हीं घरों में से बच्चे काम की तलाश में निकल जाते हैं, इस प्रवृति के कारण बाल श्रम भी बढ़ता जा रहा है।

4.2 शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण

4.2.1 शिक्षा के आधार पर शिक्षित श्रमिक

चार्ट संख्या 1 : शिक्षित श्रमिकों की शिक्षा का विवरण

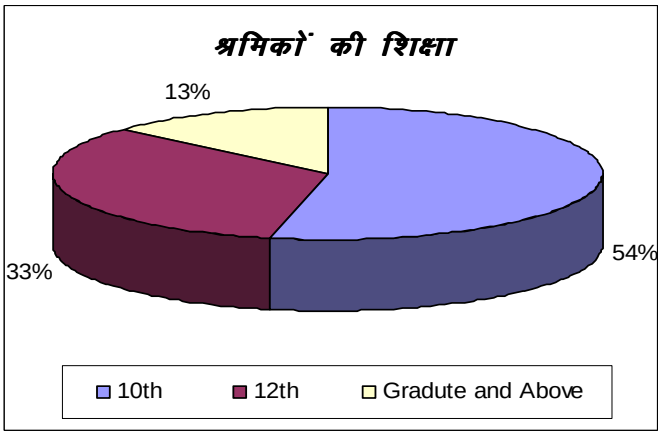

उपरोक्त चार्ट में देखें तो स्पष्ट होता है कि लगभग आधे श्रमिक ऐसे हैं जिन्होंने 12वीं कक्षा या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त की है। चार श्रमिक तो स्नातक करने के बाद भी चौकटीयों पर मजदूरी करते हुए मिले हैं। इनके सामने मुख्य समस्या यह है कि ये युवा पढ़ाई करने के बावजूद भी इतने परिपक्व नहीं हो पाते हैं कि अपने स्तर पर कुछ नौकरी की तलाश कर सकें या आज के बाजार में उपलब्ध अवसरों को अपने रोजगार का आधार बना सकें।

हालांकि यह उल्लेखनीय है कि शिक्षित श्रमिक दूसरे श्रमिकों से अलग दिख जाते हैं। वे अपने काम व अधिकारों के प्रति अधिक सजग रहते हैं। शिक्षा का एक प्रभाव यह भी दिखता है कि शिक्षित श्रमिक दूसरे कम पढ़े या निरक्षर मजदूरों से कम समय में कारीगर बन जाते हैं। शिक्षा इनके इस कार्य में भी आगे बढ़ने में सहायक होती है।

हम मैं कुछ तो अलग है

"हम पढ़ कर नौकरी तो नहीं कर पाए इसका मलाल हैं परन्तु कड़िया काम में पढ़ाई हमारे लिए फायदा पहुंचाती है।" यह कहना है नत्थाराम का जो कि खैरवाडा तहसील के दमा तालाब गांव का रहने वाला है। नत्थाराम ने स्नातक तक पढ़ाई की और सरकारी नौकरी के लिए भरसक प्रयास किए परन्तु सफलता नहीं मिलने पर साथीयों के साथ अहमदाबाद चला आया। यहां चौखटी पर मजदूर के रूप में काम की शुरुआत की और जल्द ही कारीगर बन गया। आज नत्थाराम एक छोटा ठेकेदार है और इस सबमें वह अपनी पढ़ाई की अहम भूमिका मानता है। नत्था राम के अनुसार *"मेरे साथ में और भी चार लोग आए थे और कई तो मुझसे वर्षों पहले से ही यहां पर कार्य कर रहे हैं परन्तु वे अशिक्षित या कम शिक्षित होने के कारण कारीगर नहीं बन पाए हैं। करीगर के लिए नाप-तोल, हिसाब आदि रखने की आवश्यकता होती है जिसमें हमारी पढ़ाई काम आती है।"*

4.2.2 विद्यार्थीयों की शिक्षा :–

यह सर्वविदित और सर्वव्यापी सत्य है कि शिक्षा के बिना विकास सम्भव नहीं है। शिक्षा व्यक्ति को जानकारी की ओर ले जाती है जिससे कि वह अपने लिए सभी क्षेत्रों में नए रास्ते तलाश सके। शिक्षा से प्राप्त जानकारी व्यक्ति को किसी भी चीज के बारे में अधिक सोचने की क्षमता देती है। इसीलिए हमारे यहां प्रत्येक पढ़े–लिखे व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कोई भी नौकरी करे चाहे वह सरकारी हो या निजी। पढ़े–लिखे व्यक्ति को मजदूरी करते हुए देखने पर सभी यह मानते हैं कि यह काम इसके लिए सही काम नहीं है। यही एक कारण भी है कि अभिभावक दूसरे युवाओं को नौकरी नहीं मिलने की दशा में अपने बच्चों को ज्यादा नहीं पढ़ाते हैं। जल्दी ही उनको काम पर भेज देते हैं और उनकी पढाई छूट जाती है।

चार्ट संख्या : 2 जातिवर्ग के अनुसार विद्याार्थीयों की शिक्षा

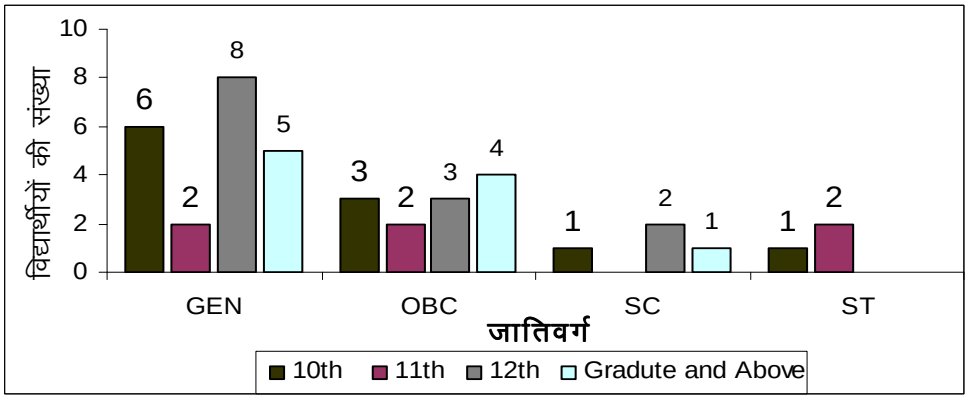

उपरोक्त चार्ट के अनुसार अध्ययन में शामिल एक चौथाई विद्यार्थी स्नातक स्तर के हैं और वे लगभग सभी सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के ही हैं। अनुसूचित जन–जाति वर्ग में तो एक भी विद्यार्थी 11वीं कक्षा से ऊपर नहीं मिला। वैसे तो कम ही अदिवासी युवा अपनी पढाई को जारी रख पाते हैं परन्तु इसका मतलब यह भी नहीं है कि इस वर्ग के युवा आगे तक की पढ़ाई नहीं करते हैं। ये युवा पढ़ाई तो जारी रखते हैं परन्तु परीक्षा देने के बाद अपने दूसरे साथी जो कि पहले से ही काम पर जा चुके हैं, के साथ मजदूरी करने चले जाते हैं। जैसे पढ़ाई के साथ ही कोई युवा इन्टरशिप करके काम का अनुभव प्राप्त करता है उसी प्रकार आदिवासी युवाओं में देखा गया है कि वे पढ़ाई के साथ ही मजदूरी का अनुभव ले लेते हैं और पढ़ाई के बाद कोई काम नहीं मिलने की दशा में मजदूरी को ही अपनी आजीविका का साधन बना लेते हैं।

अध्ययन में शामिल विद्यार्थीयों का विवरण देखें तो स्पष्ट होता है कि सामान्य वर्ग व अनुसूचित जाति के लगभग तीन चौथई विद्याार्थी 12वीं व उससे ऊपर की कक्षाओं में पढने वाले हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वे इस समय अपने भविष्य व रोजगार को लेकर सोचने के दौर से गुजर रहे हैं। परन्तु यहीं पर उनके सामने द्वंद की स्थिति पैदा होती है कि इस समय पर उनको सही जानकारियां व परामर्श नहीं मिल पाता है।

4.3 जातिय संरचना

4.3.1 शिक्षित श्रमिकों का जातिवर्ग के आधार पर वर्गीकरण

मनु स्मृति में समाज को कार्य के अनुसार बांटा गया था, कार्यों के आधार पर उनके वर्णों का निर्धारण किया गया था, परन्तु आज वैसी व्यवस्था नहीं है। आज रोजगार का निर्धारण कार्य की उपलब्धता एवं सम्पर्क के आधार पर होता है। फिर चाहे कोई भी जाति का व्यक्ति हो प्रत्येक कार्य करने में पारंगत हो जाता है।

चार्ट संख्या 3 : श्रमिकों का जातिवर्ग के आधार पर वर्गीकरण

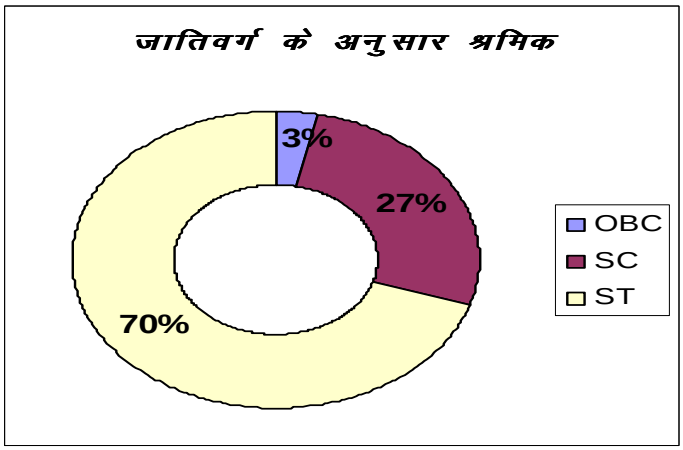

शिक्षित श्रमिकों को जातिवर्ग के अनुसार देखें तो स्पष्ट होता है कि लगभग दो तिहाई श्रमिक अनुसूचित जन-जाति के हैं। सामान्य वर्ग का एक भी सदस्य नहीं है और अन्य पिछडा वर्ग के श्रमिकों की संख्या भी नगन्य है। अनुसूचित जाति में यहां पर मेघवाल व सालवी समुदाय के युवा मिले। इस अध्ययन में निर्माण कार्य में लगे व चौकटीयों पर खडे रहने वाले श्रमिक हैं। इससे एक बात सामने आती है कि पढाई के बाद इन जन-जातिय युवाओं को कार्य की तलाश इन चौकटीयों व अन्य मजदूरी जैसे कार्यों तक ले आती है। सामान्य वर्ग व अन्य पिछडा वर्ग के युवा भी कार्य की तलाश में बाहर का रुख करते हैं परन्तु वे इन बाजारों के

थोड़े ऊपर के स्तरों पर कार्य करते हैं। उनको दूसरे स्तर का कार्य दिलाने में उनके रिश्तेदार व अन्य साथी भी मदद कर देते हैं जो कि पहले से ही इन कार्यों में लगे हुए हैं।

4.3.2 जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थी :-

शिक्षा पर किसी एक जाति या समाज का अधिकार नहीं है। परन्तु यह देखने में आया है कि विकसित या जागरुक वर्ग ही शिक्षा को अधिक महत्व देता है। शिक्षा उसके लिए सिर्फ एक नौकरी का अकर्षण न होकर जीवन उपयोगी शिक्षा भी है। सरकार आज सभी के लिए शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए सरकार की तरफ से समय-समय पर विशेष प्रयास भी किए जाते हैं।

चार्ट संख्या 4 : जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थी

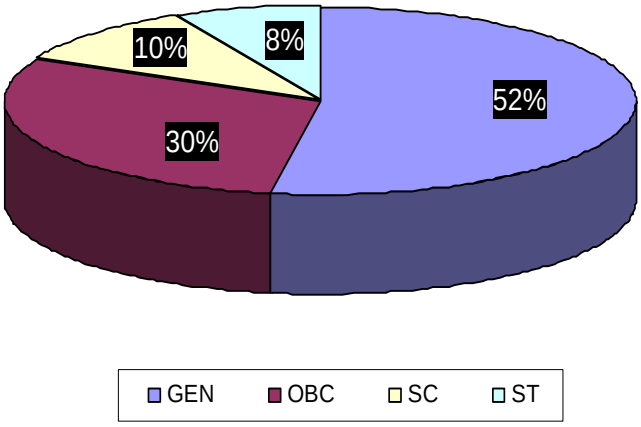

चार्ट के अनुसार अध्ययन में शामिल आधे से अधिक विद्यार्थी सामान्य वर्ग के ही हैं। लगभग एक तिहाई छात्र अन्य पिछडा वर्ग के थे। अनुसूचित जन-जाति अर्थात् अदिवासी समाज जो कि इस क्षेत्र में सबसे बडा वर्ग है के बहुत ही कम विद्यार्थी अध्ययन में आ पाए हैं। एक तो अध्ययन का समय परीक्षाओं के बाद का था और परीक्षा लगते ही अधिकतर अदिवासी युवा शहरों में काम पर चले जाते हैं। एक कारण यह भी है कि इस समाज के युवा ज्यादा आगे तक पढाई नहीं करते हैं। सामाजिक-आर्थिक जीवन के तमाम क्षेत्रों की तरह जनजातिय समाज शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछड़ा हुआ है। 2001 की जनसंख्या के आंकडों के अनुसार **80.29** प्रतिशत जनजातिय युवा मैट्रिक स्तर तक पहुंचते-पहुंचते स्कूल छोडने के लिए विवश हो जाते हैं। हमने इस अध्ययन में 10वीं तथा उससे ऊपर की कक्षाओं में पढने वाले विद्यार्थीयों को ही शामिल किया था। दिनों दिन बढ़ती बाल श्रमिकों की संख्या में भी सबसे अधिक अदिवासी समुदाय के बच्चे पाए जाते हैं।

अध्ययन में 18 छात्राऐं तथा 22 छात्र शामिल थे। छात्राओं में लगभग तीन चौथाई सामान्य वर्ग की हैं। ये वे छात्राऐं है जहां पर आगे की पढाई की सुविधा है या इनके घर वाले बाहर पढ़ाने का खर्चा वहन करने में सक्षम हैं। पढ़ाई करने वाले छात्रों में भी एक चौथाई से अधिक संख्या सामान्य वर्ग की है।

4.4 श्रमिकों की वैवाहिक स्थिति

चार्ट संख्या 5 : वैवाहिक स्थिति के अनुसार श्रमिक

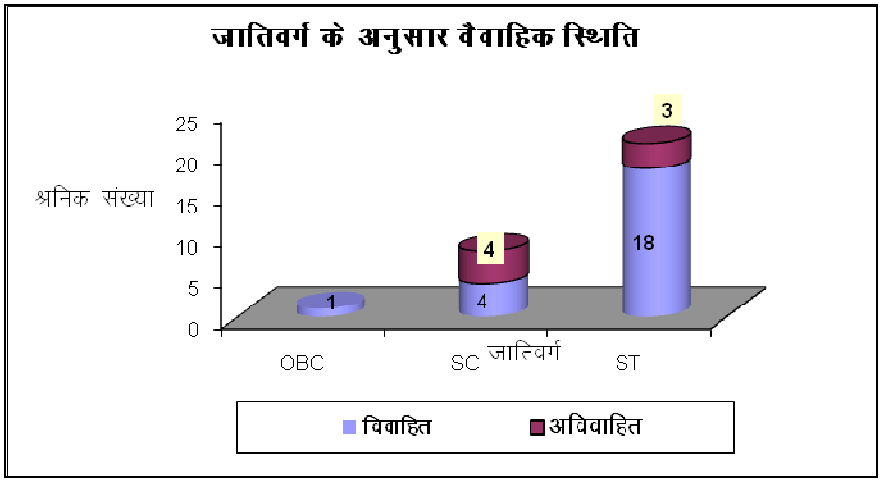

अध्ययन में शामिल दो तिहाई से अधिक श्रमिक विवाहित हैं। इन श्रमिकों का जल्दी विवाह होने से उन पर कार्य का बोझ जल्दी आ जाता है। यह भी एक कारण होता है कि इन युवाओं को पढाई को बीच में ही छोड़कर या बिना समय गबाए कार्य की शुरुआत करनी पडती है। आदिवासी युवाओं की वैवाहिक स्थिति को देख्ने से स्प्ष्ट होता है कि 86% युवा शादीशुदा हैं जो कि उनके जल्दी काम करने से सीधा सम्बंध रखता है। जल्दी शादी करना अदिवासी समुदाय की परम्परा है, परन्तु इसके कारण वह अपने भविष्य के बारे में सही निर्णय नहीं कर पाते हैं। परिवार की जिम्मेदारीयों के चलते ये युवा अपनी पढाई को जारी नहीं रख पाते हैं तथा आर्थिक जरूरतों की पूर्ति तथा अवसरों की जानकारी के अभाव में मजदूरी को ही अपनी आजीविका का साधन बना लेते हैं।

5. श्रमिकों के वर्तमान कार्य व पलायन सम्बंधी जानकारी :-

अध्ययन के इस भाग में उत्तरदाताओं के प्रवास व प्रवास के दौरान किए जाने वाले कार्य के बारे में जानकारी दी गई है। शिक्षित युवा श्रमिकों ने अपने लिए कार्य की तलाश में कई शहरों के बाजारों में जाकर कार्य किया है। बेहतर कार्य के लिए इनकी तलाश हमेशा जारी रहती है और उसी क्रम में ये युवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते रहते हैं। आगे के भाग में हम इन युवा शिक्षित श्रमिकों के वर्तमान कार्यों व उससे जुडी बातों के बारे में समझेंगे।

5.1 श्रमिकों के कार्यस्थल

चार्ट संख्याः 6 कार्य स्थल के अनुसार श्रमिकों का वर्णन

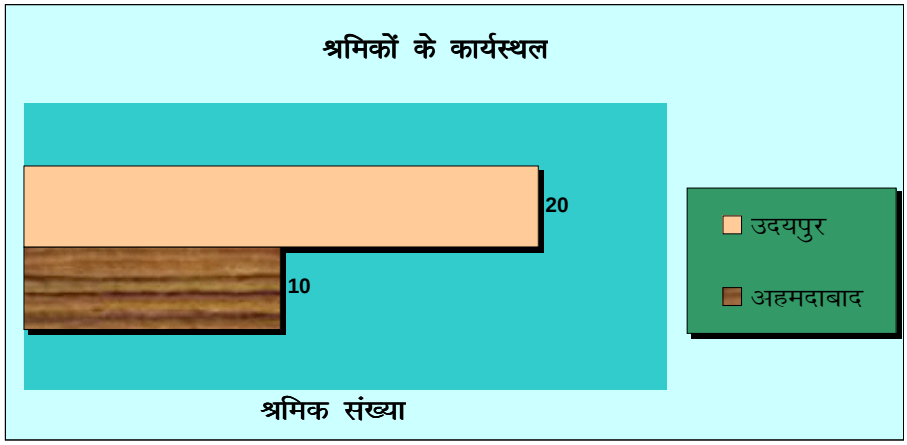

बड़े शहर हमेशा श्रमिकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होते हैं। ये इसलिए भी है कि वहां पर रोजगार के अधिक व व्यापक अवसर होने से अधिक श्रमिकों को लगातार कार्य उपल्ब्ध हो पाता है।

उपरोक्त सारणी के अनुसार ये श्रमिक उदयपुर व अहमदाबाद में कार्यरत है। हमने बड़े शहरों में ही इन श्रमिकों से सम्पर्क किया था। शिक्षित युवा वैसे भी कार्य की तलाश में बडे शहरों का ही रुख करते हैं। बड़े शहरों में मजदूरी आदि का काम आसानी से मिल जाता है। यहां के युवा पढ़ाई छोड़ने के बाद सीधे कार्य से जुडते हैं इस समय तक वे कोई हुनरवान कार्य तो जानते नहीं हैं। अतः वे अपने कार्य की शुरुआत मजदूरी व बेलदारी करने से ही करते हैं।

5.2 कार्य के वर्ष व कार्यक्षेत्र

सारणी 2 : श्रमिकों की कार्यअवधि

क्र.स.	कार्य की अवधि (वर्षों में)	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
1.	0 से 5 वर्ष तक	17	56.66%
2.	6 से 10 वर्ष तक	08	26.66%
3.	11 वर्ष व उससे अधिक	05	16.66%
कुल		**30**	**100%**

अध्ययन में शामिल श्रमिकों को कार्यअवधि के आधार पर वर्गीकृत करने पर स्पष्ट होता है कि आधे से अधिक श्रमिकों को अभी कार्य करते हुए पांच वर्ष या उससे भी कम समय हुआ है। काफी मशक्कत के बाद भी हमें बहुत पुराने पढ़े-लिखे श्रमिक नहीं मिल पाए, कोई मिले भी तो ईक्का-दुक्का क्योंकि इस कार्यक्षेत्र में अभी कुछ वर्षों से ही शिक्षित युवाओं ने इस रुख किया है। निर्माण कार्य में शुरुआती मजदूरी ठीक मिल जाती है तथा काम भी आसानी से मिल जाता है।

अभी मजदूरी में पढ़े-लिखे लोगों के आने से दूसरे कम पढ़े-लिखे व निरक्षर व्यक्तियों को लगता है कि यह कार्य तो हमारे लिए था। इन युवाओं के इस कार्य में आने पर उनमें कहीं न कहीं इस बात का भय पैदा हो गया है कि आगे आने वाले समय में इस काम में भी कमी आएगी।

काम हो जाएगा कम

अहमदाबाद में पिछले 18 वर्ष से काम करने वाले दादूराम मीणा का कहना है कि "कडिया काम में पहले वे लोग आते थे जो कि पढ़-लिख नहीं पाते थे, और मेहनत मजदूरी को ही अपनी कमाई का जरिया बनाते थे। अभी जिन लडके पढाई के बाद नौकरी नहीं मिलती है तो ये भी यहां मजदूरी करने आ जाते हैं। अगर ये ऐसे ही आते रहे तो आने वाले समय में हमारे जैसे अनपढ लोगों के लिए मजदूरी मिलना भी मुश्किल हो जाएगा।"

शहरों में रोजगार की कमी से जुड़ी हुई चिंताऐं मजदूरों में भय उत्पन्न करने लग गई हैं। रोजगार के अवसरों में मारा मारी एक उदाहरण मुम्बई शहर में देखने को मिलता है। वहां

पर लड़ाई शिक्षित और अशिक्षित की नहीं है बल्कि स्थानीय व बाहरी की है। फिर भी बात रोजगार के अवसरों पर कब्जा करने की है। ऐसी ही स्थिति दूसरे शहरों में भी उत्पन्न हो सकती है।

5.2.1 श्रमिकों के कार्यक्षेत्र

इस अध्ययन में हमने साक्षात्कार करने के लिए चौखटियों[1] पर खडे श्रमिकों से बात करना तय किया था। काम की जरूरत वाले लोग तथा ठेकेदार यहां पर इनसे सम्पर्क करके कार्य दे देते है। कारखानों में कार्य करने वाले श्रमिक भी हेल्पर के रूप में कार्य करने वाले हैं। कुछ श्रमिक रंगाई -पुताई का कार्य करने वाले हैं।

चार्ट संख्याः 7 कार्य क्षेत्र के अनुसार श्रमिकों का वर्गीकरण

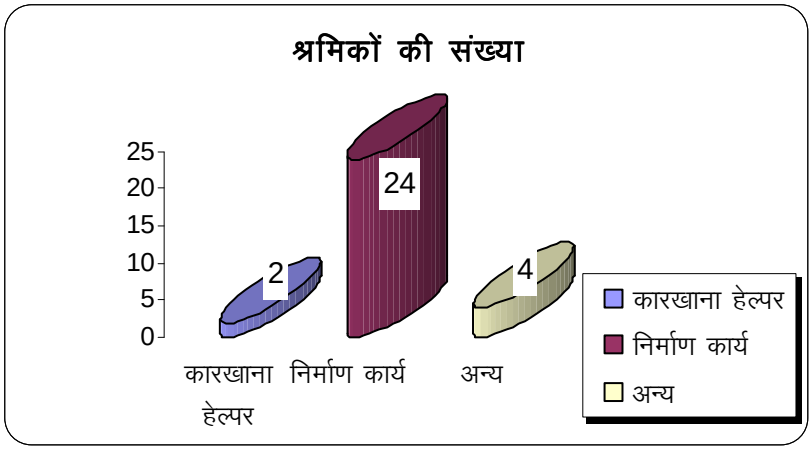

उपरोक्त चार्ट दर्शाता है कि अध्ययन में शामिल अध्ययन में हमने उत्तरदाताओं के परिवारों के बारे में भी जानकारी ली है। इसमें गांव में इन श्रमिकों के परिवारजन भी मजदूरी व निर्माण कार्यों से जुडे हुए रहे हैं। अतः इनको इस तरह के कार्यों के अलावा शहर में मिलने वाले अन्य कार्यों के विकल्पों के बारे में जानकारी नहीं है। निर्माण कार्य के प्रति आकर्षण का दूसरा कारण यह है कि निर्माण कार्य में कोई बंदिश नहीं है। जिस दिन काम करना है उस दिन चौखटी पर चले जाते हैं और जब घर जाना है तो बिना किसी दबाव के चले जाते हैं। नौकरी चले जाने का डर नहीं रहता है तथा छुट्टी लेने के लिए किसी से पूंछने की आवश्यकता नहीं होती है। इस तरह के काम करने में इनको पूरा खुलापन लगता है।

5.3 श्रमिकों की मासिक आय :-

[1] शहरों में ऐसे स्थान जहां पर काम की तलाश के लिए श्रमिक इकट्ठे होते हैं, उन स्थानों को चौखटी कहा जाता है।

प्रवास पर जाने वाले श्रमिक जो कि असंगठित क्षेत्रों में कार्य करते हैं, तथा उनका कार्य स्थायी नहीं होने से आय भी निश्चित नहीं होती है। बड़े शहरों में ये श्रमिक दिहाड़ी मजदूर के रूप में कार्य करते हैं। अहमदाबाद में काम करने वाले निर्माण मजदूरों को 130 –160 रूपये तथा कारीगर 250 – 300 रूपये तक दैनिक मजदूरी मिल जाती है। इसी तरह से उदयपुर में काम करने वाले निर्माण मजदूरों को 100 – 120 तथा कारीगरों को 175 – 225 रूपये तक दैनिक मजदूरी मिलती है। अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओं में 57% हेल्पर, 37% कारीगर और वाकी सुपरवाइजर हैं।

सारणी 3 : श्रमिकों की मासिक आय

मासिक वेतन (रुपये)	**श्रमिक संख्या**	**प्रतिशत**
2500 व उससे कम	7	21%
2501 से 3500	11	33%
3501 से 4500	4	12%
4501 से ऊपर	8	24%
कुल	**30**	**100%**

दिहाडी मजदूरों के अनेक मुद्दों के साथ प्रतिदिन काम नहीं मिलना भी एक बडा मुद्दा है। दैनिक मजदूरी ठीक होने के बावजूद भी आधे से अधिक लोगों की मासिक आय 3500 व उससे भी कम है। लगभग एक चौथाई लोगों की मासिक आय ही 4500 रूपये व उससे अधिक है। अस्थाई प्रकृति का कार्य होने के कारण माह में लगभग 20 दिन ही काम मिलता है। जिससे ये श्रमिक काम की उपलब्धता व अपने घर के काम की जरूरतों को पूरा करते हुए एक कुशल कारीगर भी बहुत अधिक आय अर्जित नहीं कर पाता है।

6. उत्तरदाताओं के परिवार व कार्य चुनाव में उनकी भूमिका :-

प्रतिवेदन के इस भाग में उत्तरदाताओं के परिवारों के बारे में जो जानकारियां इकट्ठी की गई उनका विवरण दिया गया है। इन जानकारियों में परिवार में सदस्यों की संख्या, परिवार से अन्य प्रवासी सदस्य, उत्तरदाताओं पिता की शिक्षा, व्यवसाय तथा कार्य के बारे में निर्णय में परिवार की भूमिका आदि के बारे में उल्लेख किया गया है।

6.1 श्रमिकों के परिवारों का प्रकार व सदस्यों की संख्या

व्यक्ति के प्रवास व जिम्मेदारीयों पर उसके परिवार के प्रकार का सीधा प्रभाव देखा जाता है। संयुक्त परिवार में कुछ सदस्य घर की जिम्मेदारी सम्भालते हैं तो कुछ बाहर जाकर काम करते हैं। एकल परिवार में यह विकल्प नहीं होता है इसमें दोनों ही जिम्मेदारियां उस परिवार के मुखिया और पुरुष सदस्य को ही निभानी पड़ती हैं।

आजीविका ब्यूरो द्वारा किए गए पंचायत सर्वेक्षण[2] दर्शाते हैं कि राजस्थान के प्रवासी अपने परिवारों को साथ नहीं ले जाते हैं। उनके पीछे छूटे उनके परिवार के सदस्यों को देखभाल की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में अगर वह श्रमिक संयुक्त परिवार का सदस्य है तो परिवार के दूसरे सदस्य उस जिम्मेदारी का निर्वाहन कर लेते है। एकल परिवारों में रहने वाले प्रवासीयों के लिए अपने परिवार को चलाने के लिए कार्य करना तथा उसकी देखभाल करना दोनों ही जिम्मेदारीयों को उठाना पडता है।

सारणी 4 : श्रमिकों के परिवारों की सदस्य संख्या

क्र.स.	सदस्य संख्या	परिवार संख्या	प्रतिशत
1.	3 सदस्य व उससे कम	03	10.00%
2.	4 से 6 सदस्य	19	63.33%
3.	7 सदस्य व उससे अधिक	8	26.67%
कुल		**30**	**100%**

परिवार की सदस्य संख्या श्रमिक के काम व जिम्मेदारियों को सीधे-सीधे प्रभावित करती है। शिक्षित युवा श्रमिकों की उम्र को देखें तो इनमें से अधिकतर लोगों ने अपने अलग परिवार

[2] आजीविका व्यूरो के श्रमिक सहायता एवं संदर्भ केन्द्रों द्वारा क्षेत्र से प्रवास की स्थिति व अन्य सम्बंधित जानकारी इकट्ठा करने के लिए पंचायत स्तरीय सर्वेक्षण किए जाते हैं।

की शुरुआत ही की है। सदस्य संख्या की दृष्टि से नजर डालें तो भी स्पष्ट तौर पर यह अन्तर देखने को मिलता है कि अध्ययन में शामिल 63% श्रमिकों के परिवार के सदस्य संख्या 4 से 6 के के बीच में है। जो श्रमिक 7 व उससे अधिक सदस्य संख्या वाले परिवारों में रहते हैं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वे सभी संयुक्त परिवारों में रहते हैं।

इन श्रमिकों के परिवारों में यह देखा गया है कि बाहर काम करने वाले ये अकेले नहीं हैं। आधे से अधिक परिवारों से उनके अलावा भी कोई अन्य सदस्य प्रवास करते हैं। श्रमिकों परिवार के दूसरे सदस्य भी बडे शहरों में जाकर मजदूरी तथा उसी प्रकार के कार्य करते हैं। कई परिवारों में तो यह भी पाया गया है कि उनकी पत्नी भी उसके साथ शहर में मजदूरी का कार्य करती है। स्थानीय स्तर पर रोजगार की अनुपलब्धता इनको घर छोडने के लिए विवश करती है। मंहगाई के इस दौर में परिवार के एक सदस्य के कमाने से भी परिवार की आजीविका को चलाना आसान नहीं है। अतः काम करने योग्य या कभी कभी इन परिवारों के बच्चों को भी मजदूरी करती पड़ती है।

चार्ट संख्या 8 : जातिवर्ग के अनुसार श्रमिकों के परिवार का प्रकार

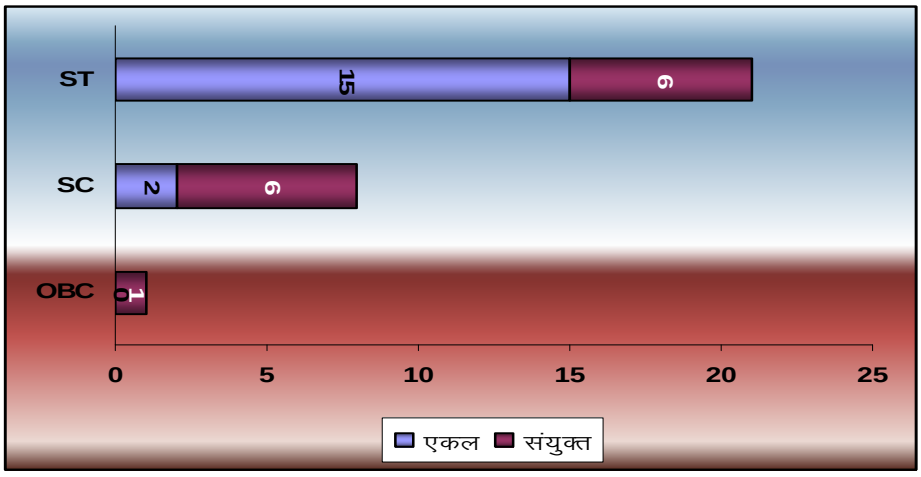

अध्ययन में शामिल हुए श्रमिकों को परिवार के प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करें तो स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जन-जाति के श्रमिकों में ही एकल परिवारों की संख्या अधिक है। अनुसूचित जन-जाति के 71% श्रमिक एकल परिवारों में रहते हैं। यह आंकडा दर्शाता है कि इन अनुसूचित जन-जाति के युवाओं पर परिवार को चलाने की जिम्मेदारी औरों से जल्दी आ जाने से उनको कार्य चुनाव के अधिक अवसर व समय नहीं मिल पाता मिल पाता हैं।

6.2 श्रमिकों के पुश्तैनी व्यवसाय

अपने आस-पास के वातावरण का प्रभाव युवाओं पर अवश्य पड़ता है। घर में जिस कार्य का वातावरण होता बच्चा शुरु से ही वही चीजें सीखता है। वातावरण से उसकी जानकारियों व जागरुकता पर सीधा प्रभाव देखा जा सकता है। एक युवक जो कि कम पढा-लिखा है परन्तु शहर के वातावरण में पला बढ़ा है उसकी जानकारी व जागरुकता का स्तर ग्रामीण युवा से अधिक होता है।

अध्ययन में हमने युवाओं के कार्य व रोजगार में निर्णय लेने, उन निर्णयों में परिवार की भागीदारी समझने तथा नए अवसरों की जानकारी के स्रोतों के बारे में जानकारी के बारे में जानकारी ली है। युवा के पढाई के बाद कार्य के बारे में निर्णय लेने में कई बातें होती है जो उसको प्रभावित करती हैं। इसमें जो एक मुख्य चीज है वह है, उसके परिवार का पढ़ाई का स्तर। इससे उसके वातावरण, जानकारी का स्तर तथा अन्य विकल्पों के बारे में जानकारी लेने की क्षमता का पता चलता है।

इन युवाओं के परिवार पढ़ाई से बहुत दूर रह गए थे। कुछ ही लोग पढे हैं और वो भी केवल प्राथमिक स्तर तक अतः यह शिक्षा इन युवाओं की जानकारी बढाने या उनको रोजगार के अवसरों से जोडने में कहीं काम आती दिखाई नहीं दे रही है।

सारणी 5 : श्रमिकों का पारिवारिक व्यवसाय

क्र.स.	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
1	खेती	25	83.33%
2	मजदूरी	3	10.00%
3	कारीगर	2	6.66%
कुल		**30**	**100%**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में आए श्रमिकों के परिवारों का व्यवसाय देखें तो स्पष्ट होता है अधिकतर लोग कृषि कार्य करने वाले थे। इससे यह बात समझ में आती है कि इन परिवारों से प्रवास कोई पुराना नहीं है। एक तरह से इन लोगों को बाजार के कार्यों के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं हो पाती है। इससे इनके घरों से कार्य के लिए बाहर निकलने वाले युवाओं पर प्रभाव पड़ता है। वह सही जानकारी नहीं जुटा पाते हैं और वह जो भी निर्णय लेते हैं उसमें परिवार वालों की जिनमें भी खासकर बड़े लोगों की कोई प्रमुख भूमिका नहीं रहती है।

6.3 विद्यार्थीयों के पिता की शिक्षा एवं परिवारों का पुश्तैनी व्यवसाय :-

शिक्षा एक तरह का वातावरण निर्माण करती है और उस वातावरण का प्रभाव उसके आसपास रहने वालों पर ही पडता है। पिता की शिक्षा व व्यवसाय का असर उनके बच्चों की शिक्षा व कार्य के चुनाव पर दिखता है। अभिभावकों की जागरुकता भी बच्चों की शिक्षा के बारे में सोचने का काम करती है। जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है कि सामान्य वर्ग व जागरुक समुदायों में आज स्वयं के पढे लिखे नहीं होने पर भी अपने बच्चों को पढ़ाने की समझ होती है। परन्तु आज भी दूसरे समाजों में इस प्रकार की प्रवृति नहीं जाग्रत हो पाई है।

सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद भी आज 21वीं सदी में 6 से 14 वर्ष के **6 करोड** बच्चे निरक्षर हैं जो कि अधिकतर आदिवासी या पिछड़े समुदायों से ही हैं। आजादी के 63 वर्ष बाद यह स्थिति हमारे लिए शर्मनाक है। भारत के संविधान नीति निर्देशक तत्वों में सरकार को यह निर्देशित किया गया था कि वह 14 वर्ष तक के सारे बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा देने की व्यवस्था 26 जनवरी 1960 तक करेगी। आज 50 वर्ष बाद भी ऐसी स्थिति को देखकर लगता है कि शिक्षा किसी विशेष वर्ग के लिए बनाई गई है। शिक्षा सभी के लिए तभी सम्भव है जब सभी व्यक्ति शिक्षा पर अपना अधिकार समझें और उससे जुड़ने का प्रयास करें।

चार्ट संख्या : 6 जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थीयों के पिता की शिक्षा

Class	Catagory				Total
	GEN	OBC	SC	ST	
Primary	5	5	1	0	11
6-8th	2	1	2	0	5
9-10th	5	6	0	0	11
11-12th	3	0	1	0	4
Graduate and above	6	0	0	3	9
Total	**21**	**12**	**4**	**3**	**40**

ऊपर दी गई सारणी में जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थीयों के पिता की शिक्षा का विवरण दिया गया है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि एक चौथाई से अधिक विद्यार्थीयों के पिता तो केवल प्राथमिक स्तर तक ही पढे होने के बावजूद अपने बच्चों के लिए शिक्षा को शिक्षा प्रदान करवा रहे हैं। अनुसूचित जन-जाति के परिपेक्ष्य में स्पष्ट होता है कि जो भी तीन विद्यार्थी अध्ययन में शामिल हुए उनके पिता स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर तक पढे हुए हैं तथा स्वयं

सरकारी नौकरीयों से जुडे हुए हैं। इस समुदाय के दूसरे कम पढे-लिखे अभिभावक अपने बच्चों को आगे तक नहीं पढ़ा पाते हैं और पढ़ भी ले तो अधिकतर सही समय पर मार्गदर्शन नहीं दे पाते हैं। आदिवासी युवाओं का पढाई के बाद भी मजदूरी करने का एक प्रमुख कारण यह भी है।

6.4 अभिभावकों की राय :-

बच्चे के लिए सबसे पहली पाठशाला उसका घर होता है तथा अभिभावकों को पहला शिक्षक माना जाता है। बच्चे जैसा घर में देखते हैं, सुनते हैं, तथा जैसा करने को कहा जाता है वैसा ही सीखते हैं। अभिभावाकों का बच्चों की शिक्षा व रोजगार के प्रति जानकारी व जागरुकता उनके भविष्य निर्धारण में अहम साबित होती है। अभिभावकों की अपनी स्वयं की जानकारी, शैक्षणिक स्तर, आसपास उपलब्ध रोजगार के अवसरों तक ही सोच पाना और श्रम बाजार में उपलब्ध रोजगार के अवसरों की जानकारी नहीं होना उनकी अपनी सीमाऐं हैं। क्षेत्र के युवाओं को पढाई के बाद सरकारी नौकरी नहीं मिलने के कारण शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच बनी हुई है। यहां पर अभिभावकों के लिए शिक्षा का अर्थ सरकारी नौकरी मिलने से होता है।

अभिभावक अपने बच्चों को पढाने के लिए तो भेजते हैं परन्तु जल्दी ही उनके लिए काम की तलाश करने लग जाते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि इस क्षेत्र से अधिकतर युवा कुछ पढ़ाई करके काम करने लग जाते हैं। इन युवाओं को काम तो आसानी से मिल जाता है परन्तु एक समय के बाद ये श्रमिक इन बाजारों से बाहर में अपने आपको टिकाए रखने में असहाय महसूस करते हैं। ये युवा बिना किसी दक्षता के शहरों में काम करने जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि इन युवाओं को इन बाजारों में निचले स्तर का, अकुशल श्रेणी का काम मिलता है। इस काम की अपनी सीमाऐं हैं, वेतन आदि एक स्तर तक ही बढ़ पाता है। नए व सस्ते श्रमिकों के बाजार में आने से पुराने श्रमिकों की उपयोगिता घट जाती है। इस प्रकार से एक समय के बाद ये श्रमिक बेरोजगार हो जाते हैं ऐसे में इन घरों के किशोर व युवा आजीविका चलाने के लिए काम पर जाने लग जाते हैं।

शिक्षा व रोजगार के बारे में अभिभावकों के विचार निम्न प्रकार हैं:-

1. अभिावकों के अनुसार हमारे क्षेत्र के युवाओं को पढ़ाई के बाद भी सरकारी नौकरियों नहीं मिल पाती हैं, फिर पढ़ाई में इनका ज्यादा समय क्यों लगाया जाए।

2. अधिक पढ़ाई कराना हमारे लिए सम्भव नहीं होता हैं और कम पढ़ाई से सरकारी नौकरियां मिल नहीं पाती हैं। अतः जल्दी ही दुकानों पर कार्य, मजदूरी आदि के लिए भेज दिया जाता है।
3. हमारे यहां के युवाओं को मजदूरी के अलावा बाजार में उपलब्ध अन्य रोजगार के अवसरों की जानकारी नहीं है। यह भी एक बडा कारण है जो उनको मजदूर बनाता है। अतः पढाई के साथ ही रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी देते रहना चाहिए।
4. युवा अपने कार्य के लिए स्वयं ही जानकारी लेता रहता है और कई बार तो अभिभावकों को बिना जानकारी दिए अपने साथियों के साथ काम करने के लिए चला जाता है। अतः वह अपनी शिक्षा को रोजगार से जोड पाने में सक्षम नहीं होता है। काम का चुनाव करते वक्त युवा शिक्षा व काम को जोडकर नहीं देखता है।
5. शिक्षा के साथ ही वैकल्पिक रोजगार के प्रशिक्षणों का जुडाव होने से पढाई के साथ ही वह हुनर प्राप्त कर लेगा और आसानी से टि्काउ काम कर सकता है।

7. स्कूली शिक्षा एवं वातावरण

7.1 विद्यार्थीयों द्वारा विषय का चुनाव :-

छात्रों को यह नहीं पता होता कि उन्हें किन क्षेत्रों में जाना चाहिए और आने वाले दिनों में किन क्षेत्रों में अधिक मांग होगी। पाठ्यक्रम में दिए जाने वाले ज्ञान की व्यावहारिक उपयोगिता हमेशा प्रश्न चिन्ह लगा रहता है। वास्तव में ज्ञान अलग है और शिक्षा अलग। समाज को जिस प्रकार के योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है वे शिक्षा प्रणाली द्वारा उत्पन्न नहीं किए जा सकते हैं। भारतीय श्रम रिपोर्ट 2007 में पाया गया है कि रोजगार के अवसर तो है परन्तु उसके लिए काबिल लोगों की कमी हैं। अतः हमारी शिक्षा प्रणाली विद्यार्थीयों को शिक्षित तो करती परन्तु वह उनको रोजगार के लिए तैयार नहीं करती है।

अध्ययन के एक उद्देश्य के तहत हमें यह जानना था कि विद्यार्थीयों को अपने विषय के कार्यक्षेत्र व उससे जुडे कार्यों के बारे में कितनी जानकारी है। मात्र 16% विद्यार्थी ही उनके पढ़े जाने वाले विषय के बारे में तथा उससे क्या कार्य मिलने की सम्भावना है के बारे में जानते हैं। 23% विद्यार्थीयों को अपने द्वारा पढ़े जाने वाले विषय की कुछ जानकारी तो है परन्तु इस विषय को पढ़कर उसे क्या कार्य मिलने की सम्भावना है उसका ज्ञान नहीं है। बाकी विद्यार्थीयों को अपने विषय तथा व उससे जुडे कार्यो के बारे में बिल्कुल ही नहीं पता है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा पूरी करने के बाद भी जानकारी के अभाव में कार्य तलाशी के प्रयास किसी और ही दिशा में होते हैं जिसमें अधिकतर समय इनको निराशा ही हाथ लगती है।

चार्ट संख्या : 9 विद्यार्थीयों द्वारा विषय चुनाव में जानकारी के स्रोत

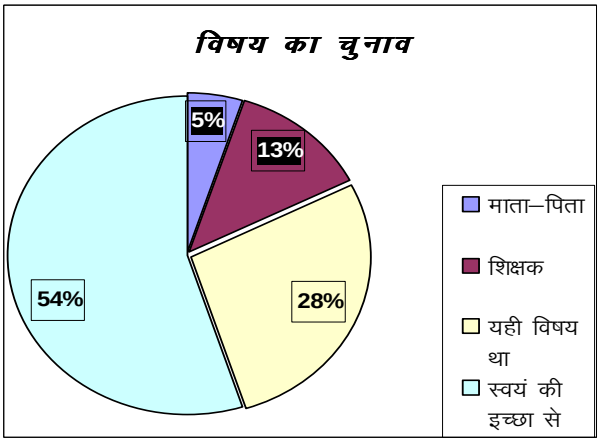

विषय से कुछ–कुछ काम की दिशाऐं तो तय होती हैं परन्तु वे तभी सम्भव है जब उस विषय के ज्ञान से उपलब्ध अवसरों के बारे में अच्छे से जानकरी हो। विषय का चुनाव रोजगार के

अवसरों के बारे में सोचने पर उसी तरह की तैयारी भी करनी पड़ती है। दिए गए चार्ट में विद्यार्थीयों द्वारा चुने गए विषयों के बारे में चुनाव स्रोतों के बारे में दर्शाया गया है। आधे से अधिक विद्यार्थीयों ने स्वयं की इच्छा से ही विषय का चुनाव किया है। एक तरह से देखा जाए तो यह समझ में आता है कि विद्यार्थीयों ने अपनी पसंद का विषय ही लिया होगा। लेकिन स्थिति यह है कि उनको विषयों की उपयोगिता के बारे में सही जानकारी नहीं है। पूर्ण जानकारी नहीं होने पर वे इस विषय से प्राप्त जानकारी को रोजगार के अवसर में तवदील नहीं कर पाते हैं। एक चौथाई से अधिक विद्यार्थीयों ने इसलिए विषय का चुनाव किया कि वे जिस स्कूल या कॉलेज में पढ़ते हैं वहां पर वही विषय उपलब्ध था। विषय के चुनाव में अभिभावकों व शिक्षकों की मदद लेने वाले 1/5 से भी कम विद्यार्थी हैं। विषय का चुनाव अपनी रुचि तथा अपने व्यावसायिक भविष्य को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसीलिए विषय के चुनाव में किसी जानकार या बडे व्यक्ति से राय लेना अधिक उपयोगी रहता है।

7.2 पढ़ाई छोडने के कारण

चार्ट संख्या : 10 श्रमिकों के पढ़ाई छोडने के कारण

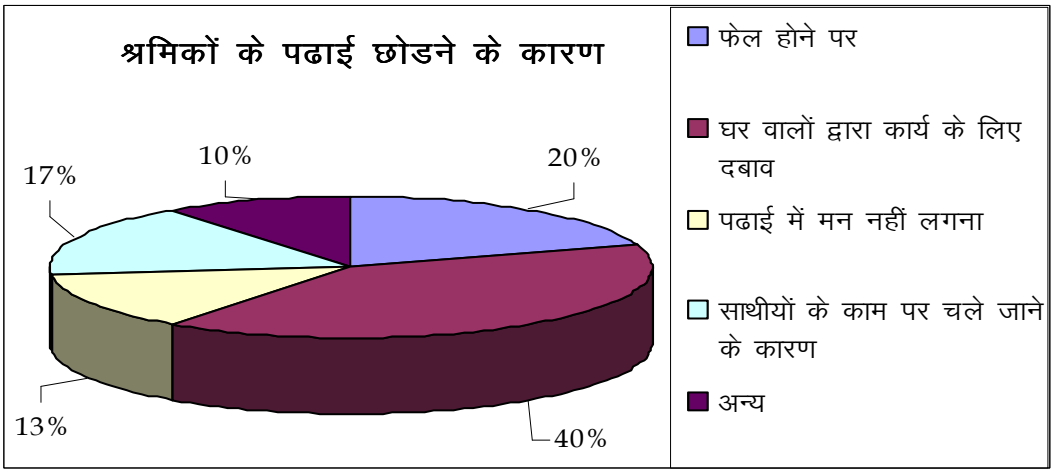

उपरोक्त चार्ट दर्शा रहा है कि 2/5 श्रमिकों को इसलिए अपनी पढाई बीच में ही छोडनी पडी कि उनके घरवालों द्वारा पैसे कमाने का दबाव आ गया था। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि आर्थिक स्थिति इनके लिए एक मुद्दा हैं और उसी के चलते इन युवाओं को समय से पहले ही अपने घर को चलाने में आर्थिक मदद करनी पडती है। शिक्षा की गुणवत्ता में कमी भी इन श्रमिकों के स्कूल छोडने में एक कारण रहा है। इसके चलते ग्रामीण स्कूलों में अच्छी पढाई नहीं होती है और छात्र फेल हो जाते हैं। परिजन छात्र को

फेल होते ही काम पर जाने की सलाह देने लग जाते हैं। परिजनों के अनुसार "फेल होने के बाद पढाई में समय लगाना बेकार है इससे तो कोई काम करो जो कि घर में दो पैसे तो आएं।"

साथीयों का काम पर चले जाना भी इन युवाओं के लिए पढाई छोड़ने का एक कारण बन कर सामने आया है। जो साथी काम पर चले जाते हैं, वे गन्तव्य पर चाहे कैसी भी परिस्थितियों में काम करें परन्तु जब गांव आते हैं तो नए कपडे, मोबाइल, तथा तरह-तरह के शौक करते हैं। इन श्रमिक युवाओं के पास पैसा होने से उसको खर्च करने की आजादी भी होती है जो कि इनके दूसरे पढाई करने वाले साथियों के पास नहीं है, इसलिए साथीयों को देखकर स्कूल जाने वाले युवा भी पढ़ाई छोड़कर काम करने का निर्णय ले लेते हैं। अपने आस-पास शिक्षा के सकारात्मक उदाहरण नहीं होना भी पढ़ाई को जारी रखना परिजनों व युवाओं के लिए प्रेरणाादायी साबित नहीं होती है। इसीलिए पढ़ाई में मन नहीं लगता है, घर वाले पढ़ाई छोडकर मजदूरी के लिए दबाव डालते हैं, और स्वयं छात्र भी अपनी मर्जी से बीच में ही काम पर चले जाते हैं। शिक्षा का स्तर भी उसकी उपयोगिता तय करता है। उद्देश्यहीन शिक्षा से भी छात्र आगे कुछ हासिल नहीं कर पाते हैं।

कैसे छूटती है कलम

जन-जातियों में शैक्षणिक स्थिति बदहाल होने का एक प्रमुख कारण उनकी निम्न आर्थिक स्थिति है। एरियर एल्विन (1963) ने जनजातियों की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि "जन-जातिय परिवार के लिए अपने किशोर बेटे और बेटी को स्कूल भेजना एक आर्थिक मुद्दा है।" एरियर एल्विन के इस कथन की प्रासांगिकता आज साढे चार दशक बाद भी इनती ही है। 2001 की जनसंख्या के आंकडों के अनुसार अन्य समुदायों की साक्षरता दर 65.38 प्रतिशत के मुकाबले जनजातियों की साक्षरता दर 47.10% थी, वहीं स्कूल छोड़ने की दर भी 53.37% थी जो कि अन्य वर्गों के मुकाबले काफी अधिक है। मैट्रिक स्तर तक पहुंचते-पहुंचते जन-जातिय समाज के 80.29 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय छोडने के लिए विवश हो जाते हैं।

8. कार्य के बारे में जानकारी के स्रोत कार्य चुनाव

प्रतिवेदन के इस भाग में पढ़ाई के समय व बाद में कार्य व व्यवसाय के बारे में जानकारी के स्रोत, निर्णय प्रक्रिया तथा कार्य चुवान के पहलू का उल्लेख किया गया है।

8.1 कार्य की जानकारी के स्रोत :–

बच्चे के लिए सबसे बड़ी पाठशाला उसका घर व प्रथम शिक्षक घरवाले होते हैं। हमेशा उसकी मानसिकता, सोच व जानकारी पर आसपास के वातावरण का असर होता है। एक तरह से देखा जाए तो यहां पर शिक्षा का गिरता स्तर व बाहरी अवसरों की जानकरी का अभाव भी युवाओं को मजदूरी व अन्य अकुशल कामों में की ओर धकेलने में सहायक होता है। कम उम्र में व अधूरी पढ़ाई करने के बाद ही ये युवा बाजारों में अपने लिए काम की तलाश करने लग जाते हैं। इस काम में इनके परिजन, साथी, तथा रिश्तेदार इनकी मदद करते हैं।

सारणी : 7 श्रमिकों के कार्य के बारे में जानकारी करने के स्रोत

क्र.स.	कार्य की जानकारी के स्रोत	जातिवर्ग के अनुसार श्रमिकों की संख्या			कुल
		OBC	SC	ST	
1	माता –पिता	1	1	4	6
2	साथी	0	2	9	11
3	रिश्तेदार	0	5	5	10
4	गांव के अन्य व्यक्ति	0	0	3	3
कुलयोग		**1**	**8**	**21**	**30**

उपरोक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि 37% युवकों को उनके साथियों ने काम के बारे में जानकारी दी थी। जो साथी पहले काम की तलाश में शहरों में चले जाते हैं और वहां पर टिक जाते हैं वे बाद में आने वाले युवाओं के लिए मार्गदर्शक का काम करते हैं। इनके दूसरे साथियों के आने पर उनको कार्य पर लगाना व काम नहीं मिलने तक अशियाना देने में ये लोग मदद करते हैं। इसी प्रकार से देखा जाए तो रिश्तेदार व परिवार के अन्य सदस्य भी अपने क्षेत्र के युवाओं को शहरों में काम पर लगाने व वहां पर उनकी मदद करने में सहयोग करते है। अध्ययन में शामिल एक तिहाई युवायों को अपने रिश्तेदारों या परिवार के अन्य सदस्यों के माध्यम से ही काम की जानकारी दी गई है। शहरों या पढे लिखे परिवारों में देखा जाए तो अपने बच्चों की आगामी पढ़ाई और काम के चुनाव में माता-पिता की अहम भूमिका रहती है। चूंकि यहां पर अभिभावक भी अधिक शिक्षित नहीं है

और उनको भी ज्यादा जानकारी नहीं होने की वजह से अपने बच्चों को काम के विकल्प बताने में अधिक सक्षम नहीं हैं। यही कारण है कि मात्र 20% युवाओं को ही कार्य के अवसरों के बारे में अपने अविभावकों से जानकारी प्राप्त हुई है। अविभावकों द्वारा पढ़ाई के बाद भी अपने बच्चों को मजदूरी के अवसर सुझाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनको भी

शिक्षा से जागरुकता और जानकारी दोनों ही बढ़ती हैं, परन्तु यह आवश्यक है कि शिक्षा उपयोगी होनी चाहिए। *फ्रेड्रिक हेयाक* ने ज्ञान और शिक्षा में जो अन्तर किया है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इसके दो बिल्कुल अलग बिन्दुओं को इस तरह बताया है कि बाजार व्यवस्था के अन्दर प्रयुक्त किया जाने वाला बहुत सा ज्ञान न तो कोडीफाई किया जा सकता है और न ही उसका भौतिकता से कोई सीधा सम्बन्ध है। जैसे दर्जी, रंगाई करने वाले, बेकरी वाले आदि अपने क्षेत्र का जो ज्ञान रखते हैं उसका कोई भी सम्बन्ध औपचारिक शिक्षा से नहीं होता है। इस प्रकार आर्थिक अवसरों के साधन के रूप में औपचारिक शिक्षा की अपनी सीमाऐं हैं। औपचारिक शिक्षा कुछ अलग तरह के लोगों को बनाती है जैसेः- नौकरशाह, प्रबंधक, डाक्टर, वकील आदि। अतः हमें अभी यह सोचने की आवश्यकता है कि व्यावहारिक ज्ञान के समावेश के बिना ग्रामीण युवाओं के लिए शिक्षा रोजगार उपलब्धता का साधन नहीं बन सकती है।

बाजार के बेहतर अवसरों व उसकी आवश्यकताओं के बारे में जानकारी नहीं है।

8.2 छात्रों को रोजगार के लिए मिलने वाली जानकारीयों के स्रोतों का विवरण :-

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार विकसित होने का अधिकार है। मानव अधिकारों की घोषणा में इस तथ्य को मूलभूत रूप से स्वीकार किया गया है। इसके लिए शिक्षा और ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, यह तथ्य सबके लिए शिक्षा की धारणा से बहुत आगे है। व्यक्ति के स्वविकास के लिए भी शिक्षा आवश्यक है लेकिन शिक्षा का कहीं न कहीं आजीविका से भी

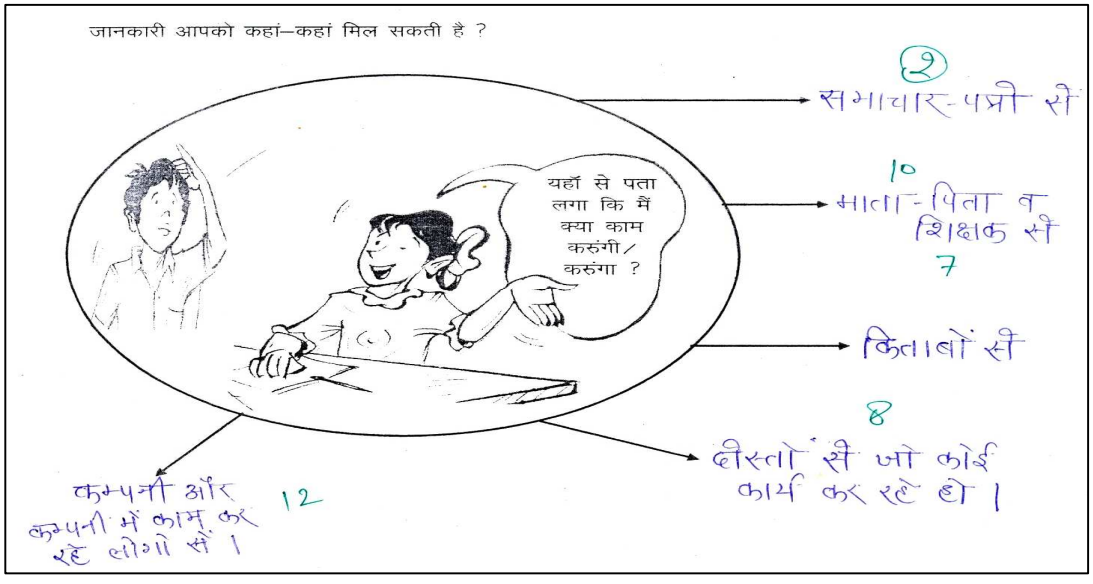

सम्बंध है। नौकरी या रोजगार में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परन्तु आजकल स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक कमावेश परंपरागत पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिन्हें पढने के बाद रोजगार की सम्भावना बहुत कम है। रोजगार देने वाले व्यक्तियों को पुनः प्रशिक्षित करना होता है।

सही समय पर रोजगार के अवसरों व उसके बारे में जानकारी के स्रोतों का ज्ञान ही व्यक्ति को उचित काम से जोड पाता है। पढाई के साथ ही अगर इन अवसरों की जानकारी के स्रोतों के बारे में पता हो तथा उसी के अनुसार आगामी पढाई व तैयारी की जाए तो निश्चित ही सफलता मिलने के आसार रहते हैं।

चार्ट संख्या : 11 रोजगार के लिए मिलने वाली जानकारी के स्रोत

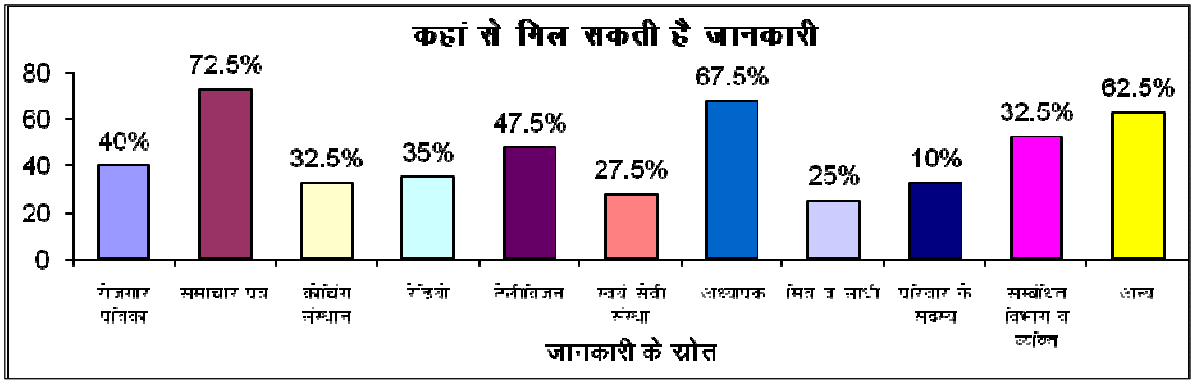

उपरोक्त चार्ट को देखने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थीयों को काम की जानकारी के स्रोतों के बारे में तो पता है। लेकिन इनमें से अधिकतर स्रोत ऐसे हैं जहां पर सरकारी या प्रतिष्ठित कम्पनीयों की नौकरीयों के बारे में ही जानकारी प्राप्त हो सकती है। समाचार पत्र, तथा अध्यापक, जानकारी के ऐसे स्रोत हैं जिनके बारे में दो तिहाई से अधिक विद्यार्थी जानते हैं। संबंधित विभाग व उसमें काम करने वाला व्यक्ति, टेलीविजन, रोजगार पत्रिका आदि जानकारी प्राप्त करने के ऐसे स्रोत हैं जो लगभग आधे विद्यार्थीयों को पता हैं। कोचिंग संस्थान, मित्र, रेडियो, स्वयं सेवी संस्थाऐं तथा परिवार के अन्य सदस्य भी युवाओं को रोजगार के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्रोत हैं जिनके बारे में एक चौथाई से अधिक विद्यार्थीयों को जानकारी है। रोजगार कार्यालय, इन्टरनेट तथा परामर्श केन्द्र रोजगार की जानकारी के ऐसे स्रोत हैं जिनको कि बहुत ही कम विद्यार्थी जानते हैं।

ऊपर दिए गए रोजगार की जानकारी प्राप्त करने के स्रोतों को ध्यान से देखें तो पता चलता है कि अधिकतर स्रोतों तक ग्रामीण युवाओं व युवतियों की पहुंच नहीं रहती है। गांवों में

समाचार पत्र नहीं मिलता है। बहुत अधिक सरकारी नौकरी करने वाले नहीं मिलते हैं जिनसे कि जानकारी ली जा सके। इसके साथ ही रोजगार पत्रिकाऐं व कोचिंग संस्थान तो ऐसे स्रोत है जो कि इन ग्रामीण विद्यार्थीयों के लिए बहुत दूर की चीज है। इसमें भी अगर आदिवासी युवक युवतियों की बात की जाए तो इनके लिए इन स्रोतों से जानकारी लेना तो और भी मुश्किल सा काम है। आदिवासी समुदाय के युवकों का स्वभाव पढाई के बाद भी अलग ही रहता है। वे शर्मीले, कम बोलने वाले तथा उनके अन्दर हिचक होती है जो कि उनके लिए बाधाऐं पैदा करती है। ये सारी बाधाऐं उसके विकास के रास्ते के हमेशा रोड़े बने रहते हैं।

8.3 कार्य चुनाव के पहलू :-

कार्य का चुनाव व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार करता है। रुचिकर कार्य को करने में आनंद तो आता ही है साथ ही कार्य भी अच्छा होता है। कार्य के चुनाव का दूसरा पहलू होता है दक्षता अर्थात् उस कार्य के बारे में जानकारी। केवल रुचि से ही काम नहीं चलता है, उस कार्य को जानना भी आवश्यक है। इन दोनों बातों के अलावा कार्य चुनाव में जो महत्वपूर्ण बात होती है वह है कार्य की उपलब्धता। उपरोक्त दोनों बातों के साथ ही कार्य उपलब्ध होना चाहिए तभी कार्य करने वाला उससे जुड़ सकता है।

चार्ट संख्या : 12 श्रमिकों के कार्य चुनाव के पहलू

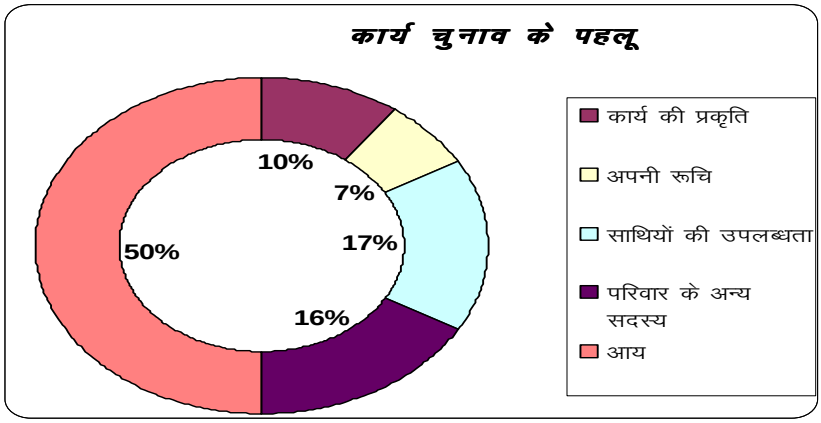

उपरोक्त चार्ट के अनुसार श्रमिकों ने अपने लिए जिन कार्यों का चुनाव किया उनमें किस तरह की विशेषताओं को देखा गया का वर्णन किया गया है। निर्माण कार्य में मजदूरी करने वाले व्यक्ति के लिए कोई विशेष तकनीकी दक्षता की आवश्यकता नहीं होती है। इस क्षेत्र में काम शुरू करने के लिए व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ्य हो व कडी मेहनत करने की क्षमता वाला होना चाहिए। अध्ययन में शामिल आधे श्रमिकों ने तो इस कार्य को इस लिए

चुना है कि इस कार्य में शुरुआती वेतन अच्छा मिल जाता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि हेल्पर को भी 120 से 160 रुपये प्रतिदिन मजदूरी मिल जाती है। एक प्रकार से अकुशल श्रमिक के लिए इस कार्य में होने वाली आय एक आकर्षण है। अर्थात् यह माना जा सकता है कि इस काम में जाने वाले आधे श्रमिक इससे प्राप्त होने वाली आय के आकर्षण के चलते इस कार्य से जुड़ते हैं। इन युवाओं के लिए साथियों की उपलब्धता भी कार्य के चुनाव का एक प्रमुख पहलू होता है। युवा अधिकतर समूह में कार्य करना पसंद करते हैं। उनके गांवों से या जानने वाले व्यक्ति पहले से जिन कार्यों में लगे हैं उन्हीं कार्यों पर ये युवा भी उनके साथ चले जाते हैं।

8.4 क्यों नहीं मिला कार्य :-

हम देखते हैं कि शिक्षा के दो उद्देश्य होते हैं- एक तो वह व्यक्ति को शिष्ट व सभ्य और सामाजिक नागरिक बनने में मदद करती है एवं दूसरा आजीविका का साधन बनती है। आज शिक्षा के विस्तार के कारण शिक्षित युवाओं की संख्या में तो बढोतरी हुई है परन्तु इनके लिए उपयुक्त रोजगार के अवसरों की कमी के चलते बेरोजगारी भी खूब बढ़ रही है। ये ऐसे शिक्षित बेरोजगार हैं जो कि आज उपयुक्त काम के अभाव में शहरों में मजदूरी करने को विवश हैं। पढाई के बाद उपयुक्त कार्य ढूंढ़ना अपने आप में एक बडा संघर्ष का काम है।

चार्ट संख्या : 13 विद्यार्थीयों के अनुसार शिक्षा के बाद भी कार्य नहीं मिल पाने के कारण

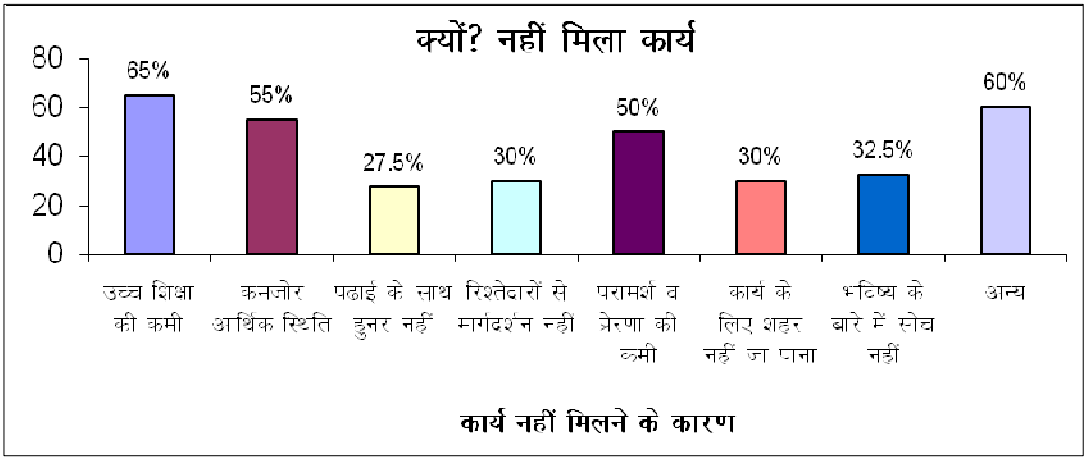

उपरोक्त चार्ट में एक ग्रामीण युवा जिसने पढ़ाई तो की है परन्तु उसके पास किसी भी तरह की तकनीकि ज्ञान नहीं है ऐसे युवाओं को इन विद्यार्थीयों के अनुसार नौकरी नहीं मिल पाने के कारणों के बारे में दिया गया है। दो तिहाई विद्यार्थीयों का मानना है कि उच्च माध्यमिक स्तर तक की पढ़ाई नौकरी के लिए पर्याप्त नहीं है। आज तकनीकि का जमाना है और उसमें किताबी शिक्षा रोजगार दिलाने के लिए पर्याप्त नहीं है। आधे विद्यार्थीयों की राय में घर की कमजोर आर्थिक स्थिति तथा परामर्श व प्रेरणा की कमी के कारण भी ग्रामीण युवाओं को रोजगार नहीं मिल पाता है। लगभग एक तिहाई विद्यार्थी मानते हैं कि खुद विद्यार्थीयों का अपने भविष्य के बारे में नहीं सोच पाना, रिश्तेदारों से मार्गदर्शन नहीं मिल पाना तथा कार्य के लिए शहरों तक नहीं जा पाना भी सही रोजगार नहीं मिल पाने में बाधक साबित होते हैं। अन्य कारणों में विद्यार्थीयों के अनुसार परिजनों द्वारा मार्गदर्शन नहीं मिलना, पढ़ाई के साथ कोई हुनर नहीं सीख पाना, समय पर उचित जानकारी नहीं मिलना, जल्दी कमाई का बोझ आ जाना आदि ऐसे कारण हैं कि जो कि युवाओं को सही रोजगार तक पहुंचने से रोकते हैं।

9. अपेक्षाऐं व भविष्य के सपने :-

9.1 क्या बनने की इच्छा है :-

दुष्यंत कुमार की कही गई पंक्ति के अनुसार *"आसमां में भी छेद हो सकता है यारो तबीयत से एक पत्थर तो उछालो!"*

पढ़ाई के समय यह तय कर पाना कि मुझे क्या बनना है अर्थात् रोजगार का चुनाव करना आवश्यक है। इससे एक तो उसी के अनुसार पढ़ाई करनी पड़ती है, विषय का चुनाव करना होता है तथा उस कार्यक्षेत्र के अवसरों की जानकारी रखने की भी आवश्यकता होती है। कार्य के चुनाव के लिए अपनी रुचि होना, उस कार्य से संबंधित विषय का उपलब्ध होना असवश्यक है। इसमें आर्थिक स्थिति भी प्रभावित करती है। कुछ कार्य व कोर्स ऐसे होते है जिनके लिए काफी सारा पैसा खर्च करना पड़ता है जो कि सभी परिवारों के लिए सम्भव नहीं होता है।

सारणी 8 : जातिवर्ग के अनुसार विद्यार्थीयों द्वारा अपने लिए सोचे गए कार्यों का विवरण

कार्य	Catagory				Total
	GEN	OBC	SC	ST	
कम्प्यूटर कार्य	7	3	0	0	10
शिक्षक	7	5	3	3	18
स्वयं की दुकान	2	2	0	0	4
इंजीनियर	2	1	0	0	3
पुलिस	1	1	1	0	3
कोई भी कार्य	2	0	0	0	2
Total	**21**	**12**	**4**	**3**	**40**

उपरोक्त सारणी के अनुसार लगभग आधे विद्यार्थी शिक्षक बनने की इच्छा रखते हैं। इसमें वैसे तो सभी जातिवर्ग के विद्यार्थीयों का रुझान है परन्तु अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन-जातिय में तो अध्ययन में शामिल लगभग सभी विद्यार्थीयों की सोच शिक्षक बनने की है। इन विद्यार्थीयों को अपने गांवों के आस-पास शिक्षक तथा कुछ गिनी चुनी सरकारी नौकरीयों की ही जानकारी होने के कारण कभी भी अन्य अवसरों के बारे में सोचने का मौंका नहीं मिल पाता है। सामान्य वर्ग व अन्य पिछडा वर्ग के विद्यार्थीयों ने आज की मांग के अनुसार कम्प्यूटर कार्य में भी अपना भविष्य बनाने का काम बनाया है। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि इस कार्य की मांग के अनुसार शिक्षा भी प्राप्त की जाए तथा कार्यों के बारे में समय-समय पर जानकारी रखी जाए। कुछ विद्यार्थी जो कि शिक्षित

परिवारों से हैं ने इंजीनियर बनने के बारे में भी सोच रखा है। चूंकि यहां से प्रवास करने वालों में अधिक संख्या तो श्रमिकों की है परन्तु एक छोटा सा वर्ग ऐसा भी है कि एक समय के बाद इन बाजारों में अपने आपको स्थापित कर लेता है और स्वयं के काम शुरु करता है। इन विद्यार्थीयों में से भी कुछ इसी तरह अपनी स्वयं की दुकान चलाकर अपनी आजीविका चलाना चाहते हैं।

9.2 श्रमिकों की कार्य से संतुष्टि :-

चार्ट संख्या : 14 श्रमिकों की कार्य से संतुष्टि

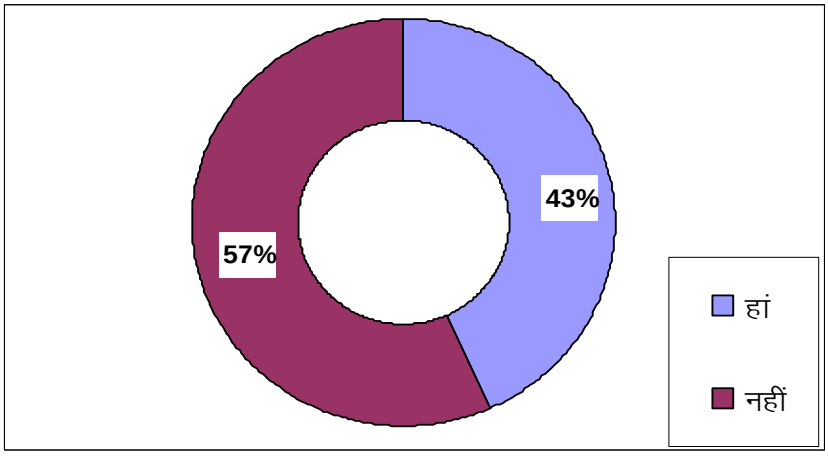

श्रमिक अपने कार्य पर टिका है इसका मतलब यह नहीं होता है कि वह उस कार्य से संतुष्ट है। यही बात उपरोक्त चार्ट से भी स्पष्ट हो रही है। आधे से अधिक श्रमिक अपने कार्य से संतुष्ट नही हैं। श्रमिकों की असंतुष्टी का मुख्य कारण यह है कि उनको पढ़ाई करने के बावजूद भी मजदूरी या अस्थाई काम करना पड़ रहा है। पढ़ाई करने के समय वो भी सरकारी नौकरी करने के सपने देखा करते थे। पर जब वे स्कूल छोडकर काम की तलाश करने लगे तो पता चला कि सरकारी नौकरी के लिए कई तरह की प्रतियोगी परीक्षाऐं पास करनी पड़ती हैं। बाजार में काम करने आए तो पता चला कि बिना दक्षता के वहां पर कोई काम नहीं मिल पाता है। अन्ततः इनको मजदूरी करने के अलावा और कोई चारा नहीं है। युवाओं के अनुसार मजदूरी के लिए पढ़ाई की आवश्यकता नहीं होती है और पढ़ाई में हमने जो समय दिया है एक तरह से वो तो बेकार ही चला गया। यही एक कारण भी है कि इन युवाओं ने समय समय पर अपने कार्यों में बदलाव भी किए हैं। अध्ययन में शामिल आधे से अधिक युवाओं ने अभी तक एक से अधिक कार्यों का अनुभव लिया है। यह दर्शाता है कि वे अपने कार्य से संतुष्ट नहीं हैं और अपने लिए उपयुक्त कार्य की तलाश में हैं।

युवाओं की शिक्षा के दूसरे पहलू को देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि चाहे वे शिक्षित होने के बावजूद भी मजदूरी कर रहे हैं पर दूसरे कम पढे-लिखे श्रमिकों से अधिक जागरुक हैं। उनमें काम सीखने की क्षमताऐं अधिक है तथा वे अपने अधिकारेां के प्रति सजग रहते हैं। ठेदेकार के साथ काम करने पर अधिक पूंछताछ करते हैं तथा अपनी मजदूरी का हिसाब अपने पास भी रखते हैं। आम तौर पर श्रमिक अपनी अग्रिम राशि तथा हाजरी का लेखा-जोखा अपने पास नहीं रखता है और कई बार ठेकेदार उसके साथ हिसाब में धोखाधड़ी कर देता है।

<u>शिक्षक कहिन</u>

अध्ययन में शिक्षकों से भी विद्यार्थीयों की भविष्य की सोच तथा जानकारी लेने की प्रक्रियाओं के बारे में बात की गई। विद्यार्थी के स्कुल में बिताए जाने वाले समय में अध्यापक ही उसके साथ होते हैं। कहीं हद तक शिक्षक इन विद्यार्थीयों की क्षमताओं, योग्यतों तथा सीमाओं से भली-भांति परिचित होते हैं। शिक्षकों के अनुसार यहां के विद्यार्थीयों की कुछ बातें निम्न प्रकार हैं :-

- आर्थिक स्थिति के कारण यहां के छात्रों के लिए पढाई जारी रख पाना सम्भव नहीं होता है। युवा विद्यार्थीयों पर कमाई का बोझ समय से पहले ही आ जाने के कारण यहां के युवा पूरी पढाई नहीं कर पाते हैं।
- जानकारी के अभाव में पढाई को शिक्षा से नहीं जोड पाते हैं। ये युवा शिक्षा भी हासिल कर लेते हैं उसके बाद भी मजदूरी ही करते हुए मिलते हैं। इसका प्रमुख कारण है कि पढाई व काम में कोई सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं। अवसरों की जानकारी के अभाव में मजदूरी ही इनके परिवार को चलाने का प्रमुख जरिया बन जाता है।
- पढाई के साथ ही व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाए तो कार्य के निर्धारण में उपयोगी हो सकते हैं। शिक्षा के समय कोई तकनीकि कार्य नहीं सीख पाने के कारण इन युवाओं के लिए रोजगार की समस्या बनी रहती है।
- युवाओं के समक्ष सरकारी नौकरी करने वालों के सकारात्मक उदाहरण नहीं होने के कारण भी ये हताश हो जाते है। जानकारी प्राप्त करने के लिए परामर्श केन्द्र बनाए जाऐं जिनमें सरकारी नौकरीयों से सम्बंधित जानकारी व उनके उदाहरण इस परामर्श केन्द्र पर उपलब्ध हो तो पढाई के प्रति आकर्षण बनेगा।
- अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोचते तो हैं परन्तु उनको भी काम के उचित अवसरों की जानकारी नहीं होने से निर्णय नहीं ले पाते हैं। अभिभावकों के अनुसार हमारे यहां के बच्चे दुकानों पर नौकरी, मजदूरी आदि तरह के ही काम करते हैं। अतः वो भी अपने बच्चे के लिए ऐसे काम की तलाश करते रहते हैं।

10. निष्कर्ष एवं सीख

युवा शिक्षा एवं रोजगार में अन्तर संबंध नामक इस अध्ययन में हमने पाया है कि ग्रामीण युवा रोजगार की तलाश करते समय अपनी शिक्षा व योग्यताओं को बहुत ध्यान में नहीं रख पाता है। उस समय उसके सामने सबसे बडी चुनौती रोजगार की तलाश करना होती है। ऐसे समय में अपनी इच्छा के कार्य की तलाश उसके लिए सम्भव नहीं होती है। छोटी उम्र में ही काम के लिए प्रवास पर चले जाना तथा बिना कोई दक्षता के काम ढूढ़ने की स्थिति में स्वभाविक है कि उसको अकुशल व निम्न प्रकृति का ही कार्य मिलता है। शिक्षा का उद्देश्य जागरुकता लाना व अपनी समझ विकसित करना है। परन्तु शिक्षा को कहीं न कहीं रोजगार के अवसर के रूप में भी देखा जाता है। यहां के युवा शिक्षा को एक सरकारी नौकरी के अवसर के रूप में तो देखते हैं। सरकारी नौकरी नहीं मिलने की स्थिति में अन्य नौकरीयों के अवसरों से अनभिज्ञ या कम जानकारी होने के कारण ये युवा इनका लाभ नहीं उठा पाते हैं और मजदूरी को ही अपना काम बना लेते हैं।

हम पढ़ाई करते समय बहुत सपने देखते हैं, बडे-बडे अरमान मन में होते हैं। जब काम की बारी आती है तो अधिकतर ऐसा होता है कि जो काम मिल जाए वही कर लो। चाहते हुए भी हमारे पास विकल्प नहीं होते हैं। इसके पीछे एक मुख्य कारण यह भी है कि पढ़ाई के समय हम कोई विशेष काम तो सीख नहीं पाए और घर चलाने की जिम्मेदारी सिर पर आ गई है। ऐसे में जो कार्य जो आसानी से मिल जाए और बिना हुनर के भी किया जा सके वही करने लग जाते हैं। कहीं हद तक यही स्थिति दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण युवाओं की भी है। पढ़ाई के बाद भी वह अवसरों के अभाव में मजदूरी करने को विवश हैं। इस तरह की स्थिति को देखने के बाद आने वाली पीढ़ीयों में भी पढाई के प्रति कोई विशेष उत्साह नहीं दिखता है। अध्ययन में यह बात सामने आई है कि शिक्षा तो ले ली पर 10वीं या 12वीं के बाद सीधे-सीधे तो कोई सरकारी नौकरी मिलती नहीं है। प्रतियोगिता पास करना या अन्य कोई डिप्लोमा करना इन युवाओं के लिए सम्भव नहीं हो पाता है अन्ततः इनको मजदूरी ही करनी पड़ती है।

- ❖ स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में भारी कमी के कारण शिक्षा से अलगाव।
- ❖ परिजनों का कार्य के चुनाव में महत्तवपूर्ण योगदान नहीं।
- ❖ पढ़ाई के दिनों में छात्रों को रोजगार के विकल्पों के बारे में जानकारी व परामर्श प्रदान की उपयुक्त व्यवस्था का अभाव।

- ❖ शिक्षा रोजगार से जोडने वाली नहीं।
- ❖ आय के विकल्प नहीं होने के कारण शिक्षित युवा मजदूरी करने को बाध्य।
- ❖ बाजार में खुल रहे नए अवसर व उनकी प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी नहीं व युवाओं को उचित परामर्श का भारी अभाव।
- ❖ वैकल्पिक शिक्षा के अभाव में अधिकतर शिक्षित युवा भी अकुशल मजदूर।

अभी पढ़ाई करने वाले छात्रों की स्थिति देखी जाए तो पता चलता है कि वर्तमान वो जो विषय पढ़ रहे हैं उस विषय के भविष्य के बारे में वह स्पष्ट नहीं है। उस विषय को पढने से आगे चल कर उनको क्या-क्या काम मिल सकते हैं, के बारे में उनको बहुत अधिक पता नहीं है। रोजगार के अवसरों के बारे में पारम्परिक स्रोतों के बारे में उनकी जानकरी तो है पर अभी यह जागरुकता नहीं है कि ये जानकारी कैसे और कब ली जा सकती है। बड़ा होकर क्या बनना है व उसके लिए क्या करना पडेगा ऐसा कोई ठोस विचार नहीं किया है। पढ़ाई के समय भविष्य के बारे में नहीं सोच पाने से शिक्षा की दिशा भी तय नहीं कर पाते हैं। शिक्षा से रोजगार को जोडने के लिए सबसे पहली चीज ही विषय का क्षेत्र जानना है। डाक्टर बनने वाले विद्यार्थी को विज्ञान विषय पढ़ना आवश्यक हैं, कला या वाणिज्य विषय की पढाई करने वाला छात्र वह इस क्षेत्र में नहीं जा सकता है।

11. सम्भावित हस्तक्षेप :-

इस अध्ययन से हमें शिक्षा और आजीविका के सम्बन्धों पर बेहतर समझ बनाने में मदद मिली है। इस अध्ययन से यह ज्ञात करने में मदद मिली है कि शिक्षा को रोजगारोन्मुखी कैसे बनाया जा सकता है। छात्रों को किस स्तर पर शिक्षा के साथ व्यावसायिक ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है और उसके क्या आसान विकल्प हो सकते हैं। उसको स्कूल में पढ़ाई के समय ही आगामी सम्भावित व अच्छे अवसरों की जानकारी होनी चाहिए या पढ़ाई छोड़ने के बाद कार्य के बारे में विकल्प सुझाए जाऐं।

आजीविका ब्यूरो का कार्य प्रवास करने वाले श्रमिकों के साथ है। ब्यूरो की अपने अनुभवों के आधार पर यह समझ बनी है, कि क्षेत्र से कार्य की तलाश में लोगों का बाहर जाने का मुख्य कारण यहां पर रोजगार के साधनों का अभाव तथा बाजार में उपलब्ध रोजगार के अवसरों की जानकारी नहीं होना है। यहां के पढे लिखे युवा भी अवसरों के अभाव व जानकरी की कमी के कारण अकुशल श्रेणी के कार्यों को ही अपनी आजीविका का साधन बनाते हैं। खासकर जनजातिय युवा जिनके पास जानकारी के स्रोतों की कमी रहती है और सामाजिक रीति-रिवाज के चलते जल्दी शादी हो जाती है। ऐसे युवाओं पर जल्दी ही कमाई का बोझ आ जाता है जिससे मजदूरी करना ही उनकी मजबूरी बन जाती है। इन युवाओं को अपनी शिक्षा को रोजगार से जोडने का अवसर नहीं मिल पाता है। अतः आजीविका ब्यूरो द्वारा व अन्य संस्थाओं तथा सरकार के द्वारा शिक्षा व रोजगार के क्षेत्र में निम्न प्रकार के हस्तक्षेप की सम्भावनाऐं सामने आती हैं :-

- उच्च शिक्षा प्राप्त लेकिन वंचित ग्रामीण युवाओं को तकनीकि जीवन कौशल शिक्षा से जोड़ने के वैकल्पिक अवसर।
- श्रम बाजार में शिक्षित युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों का पता लगाकर उसी दक्षता में प्रशिक्षित करना।
- स्कूलों में ही विद्यार्थीयों को आगामी कार्य व पढ़ाई के बारे में परामर्श देने के लिए परामर्श केन्द्र स्थापित करना।
- छात्रों के स्वयं के रुझान व अभिव्यक्ति को पहचानने के अवसर प्रदान करना।
- स्कूलों में शैक्षणिक वातावरण व अकादमिक सफलता को बेहतर करना।
- अभिभावकों को छात्रों की पढ़ाई जारी रखने के लिए संवेदनशील करना।

****